Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

03rd November 2018

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ - తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

राष्ट्र नायक सरदार वल्लभ भाई पटेल

: जयन्ती विशेष :

यदि कोई अपने मानव जन्म को सार्थक करना चाहता है, उसको अवश्य ही अपनी शक्ति और साधनों का एक अंश समाज सेवा के निमित्त लगाना चाहिए। जो इसकी उपेक्षा करता है, वह एक प्रकार से बेईमानी करता है। हमारा जीवन-निर्वाह समाज के आश्रय से ही संभव होता है। यदि हम समाज-सेवा के कर्तव्य को पूरा नहीं करते तो इसका अर्थ यह है कि हम जीवन के अंत तक समाज के ऋणी बने रहते है और उसका कुपरिणाम हमको आगामी जन्म में सहन करना पड़ेगा। इसलिए हमको अपने ही युग के महापुरुषों से, जिनमें सरदार पटेल का प्रमुख स्थान है, प्रेरणा लेकर देशभक्ति और समाज-सेवा के मार्ग पर चलना ही चाहिए।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

सरदार वल्लभ भाई पटेल (सन् १८७५ से १९५०) यद्यपि गुजरात के एक साधारण किसान परिवार में उत्पन्न हुए थे, पर उनका घराना देशभक्ति की दृष्टि से अग्रगामी कहा जा सकता है। उनके पिता झवेर भाई जब बीस वर्ष के तरुण ही थे तो भारत में विदेशी सता को उखाड़ फेंकने के लिए 'सत्तावनी गदर' फूट पड़ा। यद्यपि उसका प्रभाव गुजरात तक नहीं पहुँचा, तो भी झवेर भाई के दिल में देशोद्धार के अभियान में भाग लेने की उमंग उठने लगी और वह बिना किसी से कहे घर से भाग निकले। उन्होंने उत्तर प्रदेश में आकर नाना साहब और अंग्रेजों का तुमुल शंघर्ष देखा और फिर स्वयं भी झाँसी की वीर रानी लक्ष्मीबाई की सेना में भर्ती होकर गोरों से खूब लड़े। गदर के ठंडा हो जाने पर भी वे तात्या टोपे आदि विद्रोही नेताओं के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम की ज्योति को जगाते रहे और अंत में अपने ही देशवासी इंदौर नरेश के द्वारा पकड़े गये। वहाँ से छुटकारा पाकर ३ साल बाद वे घर लौटे और जीवन-निर्वाह के लिए पुनः अपने गृह-व्यवसाय-कृषि-कार्य में संलग्न हुए। उनका चरित्र हमको इटली के उन प्रसिद्ध देशभक्तों के तुल्य ही दिखाई पड़ता है, जो साधारण समय में खेती-बारी करते रहते थे, पर देशरक्षा की पुकार सुनते ही सब कुछ छोड़कर रण-भूमि में पहुँच जाते थे।

वल्लभ भाई भी छोटी आयु से काफी निडर और सहिष्णु थे। एक बार उनके बड़ा-सा फोड़ा हो गया। उस समय गाँवों के आसपास आपरेशन कर सकने वाले अस्पताल या डॉक्टर तो थे नहीं, इसलिए उसे फोड़ने के लिए देशी तरीके के अनुसार लोहे की शलाका गर्म की गई। पर फोड़े का इलाज करने वाला इतने छोटे बालक पर उसका प्रयोग करने में हिचकिचाने लगा। यह देखकर वल्लभ भाई ने कहा-''वाह, तुम तो फोड़े को फोड़ने में भी डरते हो।'' यह कहकर उन्होंने उस खूब गर्म सलाख को उठाकर स्वयं ही फोड़े में घुसा दिया। दर्शकगण छोटे बालक के साहस को देखकर आश्चर्य करने लगे।

जिस समय व स्कूल की छोटी कक्षा में पढ़ते थे तो उन्होंने एक लालची मास्टर के विरुद्ध आंदोलन खड़ा किया। बात यह थी कि मास्टर साहब ने स्कूल की नौकरी के साथ ही गाँव में पुस्तकों की दुकान भी खोल रखी थी और सबको इस बात के लिए विवश करते थे कि पढ़ाई की पुस्तकें अन्यत्र से न लेकर उन्हीं की दुकान से ली जायें। यह बात लड़कों को बुरी लगती थी, पर मास्टर के भय से वे कुछ बोल नहीं पाते थे। पर जब यह बात वल्लभ भाई के सामने आई तो उन्होंने इसे अनुचित समझकर स्वीकार नहीं किया और सब लड़कों को उत्साहित करके स्कूल में हड़ताल करा दी। जब लड़के पाँच-छह दिन तक स्कूल नहीं गये तो मास्टर को अपना दुराग्रह त्यागना पड़ा। इस पर वल्लभ भाई ने भी हड़ताल समाप्त करा दी।

इस प्रकार सरदार पटेल आरंभ से ही अन्याय के विरोधी रहे और साहस के साथ उसका मुकाबला भी करते रहे। उनका यह गुण जीवन के अंत तक कायम रहा और इसी के बल से वे शक्तिशाली अंग्रेज शासकों से भी डटकर लोहा ले सके। उनकी बातचीत ही प्रायः इतनी स्पष्ट और निर्भीक होती थी कि अधिकांश मामलों में उनके विरोधी उनके सामने झुककर अन्याय से हट जाते थे।

पर सबसे बढ़कर कठिनाई उपस्थित हुई हैदराबाद के मामले में। वह भारत की सबसे बड़ी रियासत थी और मुसलमान उसे अपना गढ़ समझते थे। भारत विभाजन के पश्चात् वहाँ कितने ही कट्टरपंथी मुस्लिम लोग जापहुँचे और कोशिश करने लगे कि हैदराबाद को पाकिस्तान में शामिल किया जाय। उत्तर प्रदेश के कासिम रिजवी नामक व्यक्ति ने वहाँ जाकर 'रजाकार' नाम से एक स्वयंसेवक-दल कायम कर दिया, जिसमें दो लाख हथियार बंद व्यक्ति सम्मिलित थे। हैदराबाद की ४२ हजार सरकारी सेना इसके अतिरिक्त थी। ये सब रियासत के हिंदुओं पर ही अत्याचार नहीं करने लगे, वरन आसपास के प्रदेशों की भूमि पर आकर भी लूटमार करने लगे। एक-दो बार उन्होंने रेलगाड़ी को रोककर लूट लिया और कई आदमियों को भी मार डाला। सरदार तुरंत ही हैदराबाद के विरुद्ध कार्यवाही करने को तैयार हो गये, पर नेहरू जी तथा अन्य कई मंत्रियों के राजी न होने से रुके रहे। पर जब हालत बहुत बिगड़ गई और कनाडा के राजदूत ने नेहरू जी से ईसाई स्त्रियों पर रजाकारों द्वारा आक्रमण करने की शिकायत की, तब कहीं जाकर उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने का निश्चय किया गया। सरदार ने फौज को आदेश दे दिया और मेजर जनरल जे.एन. चौधरी थोड़ी-सी सेना लेकर शोलापुर के रास्ते से आगे बढ़े।

उस अवसर पर यद्यपि कासिम रिजवी ने यहाँ तक धमकी दी थी कि अगर भारतीय सेना ने हैदराबाद में प्रवेश किया तो उसको यहाँ डेढ़ करोड़ हिंदुओं की हड्डियों के अतिरिक्त और कुछ न मिलेगा। पर सरदार ऐसी बातों की कब परवाह करते थे? उन्होंने निजाम के प्रतिनिधि लायक अली से स्पष्ट कह दिया कि ''हैदराबाद की समस्या भी उसी तरह सुलझेगी, जिस प्रकार अन्य रियासतों की सुलझी है। इसका दूसरा कोई मार्ग संभव नहीं है। हम किसी ऐसे स्थान को अपने देश में पृथक् नहीं रहने दे सकते, जो हमारे उसी संघ को नष्ट कर देगा, जिसे हमने रक्त और परिश्रम से बनाया है। हम समस्या का मित्रतापूर्ण हल ही चाहते हैं और उसके लिए प्रयत्न कर रहे हैं, किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि हैदराबाद को पूर्ण स्वतंत्र रह जाने देंगे। यदि वह स्वतंत्र रहने की अपनी माँग पर अड़ा रहा तो उसे निश्चय ही असफल होना पड़ेगा।'' यद्यपि हैदराबाद के रजाकार और अन्य धर्मांध मुसलमान बड़ा जोर-शोर दिखा रहे थे और समझते थे कि भारतीय सेना का हमला होने पर संसार के मुसलमान देश उनका साथ देंगे, पर भारतीय सेना को देखते ही वे सब बगलें झाँकने लगे। कुछ रजाकारों ने दो-तीन दिन तक जगह-जगह पर कुछ लड़ाई की, पर भारत की सुशिक्षित सेना के सामने वे भेड़-बकरियों की भीड़ से अधिक प्रभावशाली सिद्ध न हो पाये। तीन दिन के संघर्ष में लगभग एक हजार रजाकार मारे

क्रमशः पृ. ६ पर...

"वेदों का मुख्य सन्देश"

–मनमोहन कुमार आर्य

वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में आदि चार ऋषियों को परमात्मा से प्राप्त हुआ था। वेदों का ज्ञान परमात्मा ने ऋषियों को उनकी आत्मा में प्रेरणा द्वारा स्थापित किया था। हम जब किसी के शब्दों का पूरा पूरा संग्रह करना होता है, उसे जानना व समझना होता है, तब हमारा प्रयास होता है कि हम उस मनुष्य के द्वारा उच्चारित उसके समस्त व अधिकांश भाग को श्रवण करके सुरक्षित कर लें। ऐसा करने के लिये हमें अपनी आंखे बन्द कर अपना पूरा ध्यान वाचक के शब्द व वाक्यों के श्रवण में लगाना होता है। इससे हम अधिक से अधिक वक्ता की बातों को जान पाते हैं। यदि हम आंखे खुली रखें और हमारा मन वक्ता व वहां उपस्थित श्रोताओं के दर्शन भी करता रहे तो हमारे मन के अनेक विषयों पर आकर्षित होने के कारण हम पूरा-पूरा ज्ञान श्रवण नहीं कर पाते। आदि ऋषियों ने भी परमात्मा से ज्ञान लेते हुए योगी व ऋषियों की भांति पूर्ण ध्यानपूर्वक समाधि की स्थिति में ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त किया था। समाधि की स्थिति में प्राप्त ज्ञान जाग्रत अवस्था की स्थिति में प्राप्त ज्ञान की तुलना में अधिक बोधजन्य व स्थाई होता है, ऐसा हम अनुभव करते हैं। वेद ज्ञान इस प्रकार से चार ऋषियों अग्नि, वायु आदित्य व अंगिरा को अन्तर्यामी परमात्मा की ऋषियों की आत्माओं में प्रेरणा के द्वारा प्राप्त हुआ। समाधि अवस्था में ही उन्हें ईश्वर से इस ज्ञान को ब्रह्मा जी को प्रदान करने की प्रेरणा भी हुई थी। इस कार्य के लिये परमात्मा ने ब्रह्मा जी को बनाया व तत्पर किया था। ब्रह्मा जी को ज्ञान दिये जाने के बाद उस ज्ञान को शेष मनुष्यों में प्रसारित करना था। इस कार्य को ब्रह्मा जी ने अकेले या पांचों ऋषियों ने मिलकर किया, ऐसा अनुमान होता है।

परमात्मा का ज्ञान आदि सृष्टि में दिया गया था। उस समय अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों को वेद से इतर किसी प्रकार का ज्ञान नहीं था। किसी भाषा का ज्ञान भी उन्हें नहीं था जिस कारण वह न तो सोच सकते थे और न ही बोल सकते थे। बोलने के लिये सोचना पड़ता है और सेचने के लिये भाषा की आवश्यकता होती है। ब्रह्मा जी व इतर चार ऋषियों ने मिलकर सभी लोगों को बैठा कर भाषा सहित वेदों का उनकी पात्रता के अनुसार जितना अधिक से अधिक सम्भव हो सका होगा, ज्ञान दिया था। ऐसा माना जाता है और यह सम्भव भी है कि सृष्टि के आरम्भ का मनुष्य शारीरिक व बौद्धिक क्षमताओं में आज के मनुष्य से कहीं अधिक सामर्थ्यवान् था। इस कारण उसने वेदों का ज्ञान अति शीघ्रता से प्राप्त कर लिया था। इस व्यवस्था के अस्तित्व में आने के बाद ब्रह्मा जी आदि ऋषियो ने सभी मनुष्यों के लिये वेद सम्मत सामाजिक व्यवस्था का शुभारम्भ किया था। उसी सामाजिक व्यवस्था को इसके बाद भी हमारे ऋषि, मुनि व विद्वान चलाते रहे और आज भी वेद, वैदिक साहित्य तथा ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से इस व्यवस्था को जाना जा सकता है। प्राचीन व आदि काल से ही वैदिक समाज व्यवस्था मनुष्यों के गुण, कर्म, स्वभाव व सामर्थ्य पर आधारित थी जिसका कारण वेदों में इसका विधान व प्रेरणा का होना है। वैदिक काल में किसी मनुष्य के साथ किसी प्रकार का पक्षपात, शोषण व अन्याय नही होता था। वैदिक राजा व न्याय व्यवस्था निरंकुश न होकर प्रजा का हित व उनकी रक्षा करने वाली थी। इसलिए प्रजा हित के लिए सभी उपाय व प्रबन्ध राजपुरुष किया करते थे। महाभारतकाल के बाद मध्यकाल व उत्तरोत्तर काल में अज्ञानी व वाममार्गीयों ने अपनी अज्ञानता व कुत्सित मान्यताओं के कारण अर्थ का अनर्थ किया जिससे समाज में विषमतायें उत्पन्न हुई।

वेद का मुख्य प्रयोजन एवं सन्देश सभी मनुष्यों को सन्मार्ग बताने के लिये उन्हें ईश्वर, जीव, प्रकृति सहित उनके सभी कर्तव्यों एवं विद्याओं का बीज रूप में ज्ञान देना रहा है। परमात्मा ने ऋषियों को वेदों का ज्ञान देने के साथ आदि ऋषियों व इतर मनुष्यों में वेद ज्ञान से अपनी सभी समस्याओं का निवारण कर जीवन उन्नति करने की सभी प्रकार की शारीरिक, आत्मिक व बौद्धिक क्षमतायें प्रदान की थीं। आज भी मनुष्य का निर्माण माता के गर्भ में व उसके बाद परमात्मा के बनाये सृष्टि नियमों द्वारा ही होता है। इसमें मनुष्य के भोजन व संस्कारों का भी विशेष महत्व होता है। वेद एवं वैदिक साहित्य का अध्ययन करने के बाद यह तथ्य सामने आता है कि मनुष्य का मुख्य उद्देश्य ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति को जानकर मनुष्य जीवन की उन्नति करना है। इसके लिये पंच महायज्ञों का वैदिक विधान जो ऋषि दयानन्द जी ने हमारी आवश्यकताओं के अनुरुप किया है हमें उपलब्ध है।

ऐसा ही व इससे मिलता जुलता किंचित न्यूनाधिक सन्ध्या व यज्ञादि का विधान महाभारत काल व उससे पूर्व के समय में भी रहा होगा। वेद और वैदिक साहित्य साधारण मनुष्य को ज्ञान प्रदान कर उसे देव व ऋषि कोटि का विद्वान मनीषी बनाने का मुख्य साधन है। यदि वेद न होता तो मनुष्य ईश्वर, जीवात्मा के स्वरूप व गुण, कर्म व स्वभाव, ईश्वर की उपासना की यथार्थ विधि, पंचमहायज्ञों, संस्कारों, मनुष्य जीवन के उद्देश्य व उसकी प्राप्ति के साधन, भक्ष्याभक्ष्य, गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार युवावस्था में विवाह, चार आश्रमों तथा ब्रह्मचर्य आदि के महत्व को न जान पाता। हमारा सौभाग्य है कि हम ऋषि दयानन्द जी की कृपा व उनके साहित्य से वेदों के सत्यस्वरूप तथा वेदमन्त्रों के सत्य अर्थों को जानने सहित समग्र वैदिक विचारधारा व सिद्धान्तों को समझने में समर्थ हो सके। आज हम गाय का जो महत्व जानते हैं वह वेद ज्ञान से रहित मनुष्य नहीं जानते। वेद ज्ञान से अनभिज्ञ शिक्षित लोगों को सच्चा विद्वान व ज्ञानी भी नहीं कहा जा सकता। पुनर्जन्म का सिद्धान्त वेदों पर ही आधारित है। इसका ज्ञान वेदानुयीयियों को ही अधिक होता है। हमारे पास पुनर्जन्म के समर्थन में तर्क व युक्तियां हैं और पुराने ग्रन्थकारों व वेदों के प्रमाण भी हैं। वेदों में नारी का जो उज्जवल स्वरूप, उसके कर्तव्य व अधिकार आदि का उल्लेख मिलता है वैसा संसार के किसी धार्मिक व सामाजिक साहित्य में नहीं मिलता। वेदों के प्रवर विद्वान आचार्य डा. रामनाथ वेदालंकार जी ने ''वैदिक नारी' नाम से एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक में उन्होंने वैदिक नारी के जीवन के विभिन्न पक्षों पर वेद के प्रमाणों से प्रकाश डाला है। यह पुस्तक सभी नारी व पुरुषों को पढ़नी चाहिये। इससे नारी को अपने जीवन को ऊंचा उठाने में मार्गदर्शन प्राप्त होगा। वेदों को हमें इस लिये भी पढ़ना चाहिये कि वेदों में सभी विद्याओं का आदि मूल है। आज भी वेदों का अध्ययन करके अनेक विषयों से सम्बन्धित कई रहस्यों को जाना जा सकता है।

वेदों का अध्ययन मनुष्य का जीवन व चरित्र दोनों को ऊंचा उठाता है। वेदों का अध्येता मनुष्य दुर्गुणों, दुर्व्यसनों तथा दुःखों से दूर रहता है। अनेक दुःख हमारे अज्ञान, दुर्गुणों व दुर्व्यसनों का ही परिणाम होते हैं। वेदों का अध्ययन कर व उसके अनुसार आचरण कर मनुष्य उन दुर्गुणों आदि से बच जाता है। हमें वेदान्मुख होना है न कि वेदविमुख। वेदोन्मुख होकर ही हम आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति कर सकते हैं। वेदों के महत्व के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है। वेदों का महत्व जानने के लिये हमें ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि आदि सभी ग्रन्थों सहित उनके वेदभाष्य का अध्ययन व मनन करना चाहिये। उच्च कोटि के वैदिक आर्य विद्वानों का साहित्य भी पढ़ना चाहिये। इनमें हम स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी वेदानन्द तीर्थ, पं. बुद्धदेव मीरपुरी, पं. शिवशंकर शर्मा, पं. विश्वनाथ विद्यालंकार, आचार्य डा. रामनाथ वेदालंकार, पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, पं. शिवकुमार शास्त्री आदि का साहित्य पढ़कर लाभ उठा सकते हैं। वेदों का अध्ययन करते हुए हम अपने व्यवसाय से सम्बन्धित साहित्य का भी अध्ययन कर सकते हैं। मनुष्य का कर्तव्य सत्य को ग्रहण तथा असत्य का त्याग करना है। वेदों के मार्ग पर चलना व दूसरों को वेद के मार्ग पर चलने की प्रेरणा करना भी सब मनुष्यों का कर्तव्य है।

वेदों में ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का जैसा यथार्थ चित्रण उपलब्ध होता है वैसा ही इन सत्ताओं का स्वरूप हमें जगत में देखने को मिलता है। युक्ति व तर्क से भी वेद वर्णित स्वरूप सत्य सिद्ध होता है जबकि पौराणिक व अन्य सभी मतों में ईश्वर व जीव आदि से सबंधित वेद विरुद्ध मिथ्या बातों की अधिक भरमार है। इससे वह सभी मत सत्यासत्य मिश्रित विष संयुक्त अन्न के समान त्याज्य है। वेदों में किसी प्रकार की कोई ऐतिहासिक व काल्पनिक कथा का वर्णन नहीं है। अन्य सभी मत व पंथ के ग्रन्थों में किस्से, कहानियां व कथायें उपलब्ध होती हैं। इससे वेद ग्रन्थ विद्या के ग्रन्थ सिद्ध नहीं होते। वेदों की सभी मान्यतायें ज्ञान व विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुकूल हैं जबकि यह कसौटी मत-पन्थ के ग्रन्थों पर लागू नहीं होती। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वेद ही सर्वमान्य एवं आदर्श धर्म ग्रन्थ हैं। वेद के अनुरूप व समान संसार में कोई ग्रन्थ नहीं है। जो व्यक्ति आर्यसमाज के अनुयायी हैं वह संसार में सबसे अधिक भाग्यशाली हैं कि उन्हें ईश्वर ज्ञान वेद सुलभ हैं और वह उसका स्तुति, प्रार्थना, उपासना, यज्ञ, संस्कार आदि में उपयोग करते हैं। वेद विश्व की सर्वोत्कृष्ट भाषा वैदिक आर्ष संस्कृत में हमें ईश्वर, जीवात्मा तथा सृष्टि के स्वरूप सहित सृष्टि के सभी रहस्यों का परिचय देते हैं और हमारे कर्तव्यों का बोध भी प्रदान करते हैं। इसी के साथ इस चर्चा को विराम देते हैं।

दयानन्द तो दयानन्द ही था !

-सत्यपाल आर्य

भारतवर्ष में उन्नीसवीं शताब्दी जन-जागरण का काल है । इस काल में उच्च से उच्च, महान से महान अनेक महामानवों ने जन्म लिया है । उनमें से स्वामी दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व, देश-धर्म सेवा, वेदोद्धार, समाज सुधार संस्कार आदि अपनी महिमा से अलग ही स्थान रखते हैं ।

योगीराज अरविन्द के शब्दों-''सभी महापुरुष पर्वतशिखिरों की भान्ति अपनी छटा, अपनी आभा, अपनी सुन्दरता अलग-अलग रूपों में प्रकट करते हैं । सभी एक दूसरे से भिन्न, मनोहर, मनोरम, दर्शनीय प्रतीत होते हैं । किन्तु इन सब उत्संग श्रृंगों में सबसे उन्नत गौरीशंकर के समान है अप्रतिम, उद्‌भुत, अपूर्व महर्षि दयानन्द का बहुआयामी व्यक्तित्व । निराला, विचित्र, ब्रह्मचर्य से उद्‌दीप्त, तपस्या से कुन्दन, आर्षज्ञान से प्रात्जल, स्वर्णाभिराम, वर्णनातीत है उनका जीवन ।''

ईशा की उन्नीसवीं शताब्दी में जन्म लेकर जिन-जिन महापुरुषों ने भारतीय राष्ट्र, धर्म, समाज, संस्कृति की अपूर्व सेवा की है उनमें दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती के परम शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम अनन्यतम है ।

''स्वामी दयानन्द सरस्वती (१८२४-८३) उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रारम्भ हुए भारतीय पुनर्जागरण युग के महान युग निर्माताओं में से एक हैं । वे केवल एक सुधारक मात्र ही नहीं थे जिन्होंने भारतीय समाज व धर्म सुधार का एक प्रबल आन्दोलन आरम्भ किया वरन वे एक प्रगतिवादी चिन्तक, दार्शनिक व मनीषी थे ।''

''स्वामी जी महाराज पहले महापुरुष थे, जो पश्चिमी देशों के मनुष्यों के भी गुरु कहलाए, जिनको अनेक पश्चिमी मनुष्य गुरु, आचार्य और धर्मपिता मानते थे ।

जिस युग में स्वामी जी हुए हैं, उनसे अनेकों वर्ष पहले से आज तक ऐसा तक ही पुरुष हुआ है जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पैर भी नहीं रखा था, जो स्वदेश के अन्न जल से पला था, जो विचारों से स्वदेशी था, जो आचारों से स्वदेशी था, भाषा और वेश में स्वदेशी था, किन्तु वीतराग और परम विद्वान होने से सबका भक्ति भाजन बना हुआ था, जिसका देशी, विदेशी सभी मान करते थे । ऊँचे से ऊँचे राजे महाराजे सम्मान करते थे, वह पुरुष महर्षि दयानन्द ही था । महर्षि को छोड़कर भारत के इस युग में एक भी पुरुष ऐसा नहीं हुआ, जिसने विदेशी भाषा न सीखी हो अथवा विदेश यात्रा न की हो और फिर भी स्वदेश में सम्मानित हुआ हो ।

''स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन का मुख्य कार्य धर्म प्रचार था, आर्यों के धर्म को सर्वोत्तम, सबसे पुरातन और ईश्वर प्रदत्त मानते थे । आत्मज्ञान आर्य धर्म की प्रधानता का सूचक है । आत्मज्ञान से आर्यों का पहले भी उत्कर्ष हुआ है । इस तत्व के पाठ इन्होंने सब जातियों को पढ़ाये हैं, इसमें ये सारे संसार के शिक्षक रहे हैं और अब भी हैं ।''

इस आत्मज्ञान के मूल स्त्रोत ईश्वर प्रदत्त वेद हैं । वेद से ही इस तात्विक ज्ञान का निःसंरण हुआ है । इसीलिए श्री स्वामी जी की वेद में अपार भक्ति थी । वे पक्के वेदानुयायी थे । वेद विश्वास और वेद की अपौरषकता को स्थगित कर वे किसी से कभी भी संधि करने को उद्यत न थे ।''

''महाराज का परमात्मदेव में परम विश्वास था । वे ईश्वर तत्व का पूरा भरोसा रखते थे । उसी जगदीश की शान्त शरण में रहते हुए वे विपत्ति वज्रपात से भी घबराते नहीं थे । महाराज वेद विश्वास की भांति ईश्वर विश्वास के भी पक्के थे । वेदज्ञा और एक निराकार ईश्वर भक्ति धर्म के ये दो अंग सार्वजनिक थे । इसी केन्द्र पर सारी जातियों को लाने के लिए आजीवन सचेष्ट रहे ।''

वे प्राचीनता की दुर्गा के अनन्य प्रेम से पक्के पूजक थे । आर्यों का अतीत काल, उनको स्वर्णिम आचारों और स्वर्णिम विचारों से समावृत, स्वर्ण स्वरूप प्रतीत होता था । आर्यों की पुरानी सभ्यता की अवहेलना वे कदापि सहन नहीं कर सकते थे । उनका निश्चय था कि नवीन मतों ने, महन्तों ने और मठों ने पुरातन काल की महता पर मिट्टी डाल दी है ।''

''महाराज सार्वजनिक हित के लिए ही हाथ में तर्क का तीर खण्डन के भूखण्ड में उतरे थे । रोगी के फोड़े फुन्सियों का जब तक छेदन न किया जाये, उसका स्वस्थ होना दुष्कर है । खेतों में से जब तक झाड़ झंखाड़ उखाड़ कर, घास फूस निकाल कर इसका शोधन न किया जाए उसमें खेती का सुफलित होना असम्भव है । ऐसे ही किसी देश और जाति में से जब तक कुरीतियों को दूर न किया जाए और उसके आचार विचार का संशोधन न हो, तब तक उसकी उन्नति के सोपान पर पदार्पण करना महाकठिन है । सुधार का कार्य सर्वप्रिय तो नहीं, परन्तु सार्वजनिक हित से पूर्ण अवश्य हुआ करता है ।'' खण्डन खड़ग का अवलम्बन करते समय भी महाराज के महान् हृदय में परहित पूर्ण ही रहा था ।''

''स्वामी जी महाराज ने सामाजिक-सुधार में ब्रह्मचर्यावस्था पालन करना अत्यावश्यक बताया हैं । एक-एक दो-दो वर्ष के बालाकों का विवाह करना देश के अधः पतन बताया है ।

''उन्होंने वर्णश्रम व्यवस्था को गुण कर्म के अनुसार माना है । किसी जाति के जन का उत्तम तथा निकृष्ट होना जन्म और नाम से नहीं मानते थे ।''

''महाराजा शूद्रों के सुधार के बड़े पक्षपाती थे । उन्हें भी सर्जनकर्त्ता की सर्वश्रेष्ठ कृति समझते थे । चतुर्थ वर्ण से घृणा करना, उसे अस्पृश्य समझना उनके निकट मनुष्य पदवी से गिरा हुआ कर्म है । जो लोग कुत्तो को छूते हैं, बिल्लियों से खेलते हैं, भैसों को हाथ लगाते हैं, ऊँटों को स्पर्श करते हैं, घृणित से घृणित जीव जन्तुओं को भी छू लेते हैं और अपने हाथ से पशुओं के चमड़े का बना जूता पहन व उतार लेते हैं, वे मनुष्यों को अछूत समझ उससे दूर भागा करें, यह कितना अन्याय है, अधर्म है, महाराजा शूद्रों को वेदाधिकार देते हुए लिखते हैं, ''जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि सब पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे ही वेद भी सब मनुष्यों के लिए प्रकाशित किए हैं ।''

''श्री स्वामी जी ने स्त्री जाति के सुधार का भी परम कार्य किया है । शास्त्र रीति से उनको भी वेदाधिकार दिया है । महाराज स्त्री शिक्षा एवं स्त्रियों का महत्व वर्णन करते हुए लिखते हैं-

''स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य धारण और विद्या ग्रहण अवश्य करना चाहिए । भारत की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि देवियां शास्त्रों को पढ़कर पूरी विदूषी हुई है ।'' देखो, आर्यावत में राजपुरुषों की स्त्रियां दशरथादि राजाओं के साथ संग्राम में कैसे जा सकती थी ? स्त्रियों को व्यकरण, धर्म, वैध गणित और शिल्प विद्या अवश्य सीखनी चाहिए ।''

''श्री स्वामी जी महाराज से भारतवासियों की दरिद्र दशा छिपी न थी । उन्होंने अपने विस्तृत पर्यटन में अकाल पीड़ित देशवासियों की करूणाजनक अवस्था को अपनी आंखों से देखा था । उनके हृदयबोधक रोदन व करूण कन्दन को अपने कानों से सुना था । श्री स्वामी जी यह भी मानते और जानते थे कि भारत भूमि रत्नगर्भा है, सुजला है, सुफलता है । ऊसर नहीं किन्तु उर्वरा और सस्यशालिनी है ।''

''फिर भी यहां भूख, दुर्भिक्ष और अभाव क्यों है ? इसका कारण शिल्पकला का भारी अभाव है । विदेशी वस्तुओं की भरमार से यहां के लाखों परिश्रमी निकम्मे व बेराजगार हो रहे हैं । उनके जीवन के अन्तिम वर्षों में उनके धर्मप्रचार और समाज सुधार आदि उदात्त उद्देश्यों से भारतवर्ष में शिल्पकला विस्तारिक करना भी सम्मिलित होगया था । स्वामी जी जहां देशवासियों की आत्मिक भूख प्यास को वेदोपदेश द्वारा दूर करते थे, वहां उनकी शारीरिक क्षुत्पिपासा को उपराम करने के लिए शिल्पकला के सुदृढ़ सूत्रपात भी कर रहे थे ।''

''स्वामी दयानन्द ने शिक्षा सुधार पर सबसे अधिक बल दिया है । वे जानते थे कि जब तक सर्वसाधारण में सुशिक्षा का प्रचार नहीं होता, तब तक उन्नति नहीं हो सकती । करोड़ो मनुष्यों को एक उद्देश्य परलाने के लिए शिक्षा सबसे ऊँचा साधन है । वह शिक्षा भी धर्मसहित और जातीय होनी चाहिए ।''

ऐसे समय में जबकि मैकाले की शिक्षा नीति की बदौलत भारत का युवक पढ़ लिखकर देश, धर्म, संस्कृति से कटता जा रहा था, स्वधर्म को हेय मानकर तिलाञ्जति देकर ईसाईयत के जाल में फंसता जा रहा था, स्वामी दयानन्द सस्वती ने अपने कालपयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सम्पूर्ण दूसरा समुल्लास शिक्षा नीति को समर्पित किया है । तीसरे समुल्लास सहित उनके व्याख्यानों, लेखों, वेदभाष्य आदि समस्त ग्रन्थ शिक्षा नीति से अछूते नहीं हैं ।

सबके लिए समान अवसर, समान सुविधा, समान व्यवस्था की वकालत करने वाले स्वामी युग के प्रथम आचार्य थे । सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में लिखते हैं -

''सबको तुल्य वस्त्र, खानपान, आसन दिए जाए चाहे वह राज कुमार हो वा राजकुमारी और चाहे दरिद्र की सन्तान हो'' । स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन जातिपाति, छुआछूत और अमीर गरीब के बीच की खाई की सम्भावना को ही ज़मूल से नष्ट कर देता है ।''

अनिवार्य शिक्षा के विषय में स्वामी दयानन्द लिखते हैं -

''राजा को योग्य है कि वह अब कन्या और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखकर विद्वान कराना । जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उसके माता-पिता को दण्ड देना, अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का और लड़की किसी के घर में न रहने पावे किन्तु आचार्य के कुल में रहे, जब तक समावर्तन का समय न आवे तब तक विवाह न होने पावें ।'' स्वामी दयानन्द ने अनायास बाल श्रम, बाल विवाह, अनेक विवाह, बन्धुआवृत्ति, अशिक्षा, जाति पाति छुआछूत आदि समाजिक बुराइयों को समाप्त करने का रास्ता दिया है । स्वामी दयानन्द सहशिक्षा के परम विरोधी थे । वे स्वयंवर विवाह के पक्षपाती थे । वर्णव्यवस्था लागू करके उन्होंने श्रम और सम्पति के अधिकारों की क्रान्तिकारी व्यवसस्था प्रदान की है ।

आज आवश्यकता है समाज की सड़ी गली व्यवस्था को बदलने के लिए स्वामी दयानन्द के ज़ीवन दर्शन पर चिन्तन और आचरण की ।

...पृ. २ का शेष

गये, जबकि भारतीय सेना की मृत्यु संख्या नाम मात्र को ही थी । १७ सितंबर १९४८ को हैदराबाद के प्रधान सेनापति एल. एदरूस ने जनरल चौधरी के सामने बाकायदा आत्म समर्पण कर दिया और १८ सितंबर को जनरल चौधरी हैदराबाद के सैनिक गवर्नर नियुक्त कर दिये गये । फरवरी १९४६ में सरदार दक्षिण भारत की यात्रा करते हुए हैदराबाद पहुँचे तो निजाम ने स्वयं हवाई अड्डे पर आकर उनका स्वागत किया और भारतीय-प्रथा के अनुसार हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया, जो उनके जीवन में एक सर्वथा नई और सर्वप्रथम घटना थी ।

हैदराबाद की समस्या को इस प्रकार ३ दिन में हल करके सरदार ने भारतीय सैनिक शक्ति और राजनीति की धाक समस्त देश में जमा दी । इससे वे सब 'तत्त्व' ठंडे पड़ गये, जो शासन बदलने के कारण जगह-जगह सर उठा रहे थे और समझते थे कि हम इन अनुभवहीन शासकों को दबा-धमकाकर अपना उल्लू सीधा करते रहेंगे । हैदराबाद की इस शानदार विजय से भारतीय जनता में उत्साह की लहर दौड़ गई और शेष बची रियासतें बहुत शीघ्र भारतीय संघ के अंतर्गत आने को तैयार हो गई ।

छह-सात सौ रियासतों का भारतीय संघ में पूर्णतः विलय होकर एक अखंड राष्ट्र का निर्माण कुछ समय पहले तक एक असंभव कार्य समझा जाता था । पर सरदार पटेल ने उसे ऐसी खूबी से पूरा करके दिखा दिया कि देश-विदेशों के समस्त राजनीतिज्ञ चकित रह गये । यह कहने में कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं कि जो कार्य जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क ने कर दिखाया और जापान को एक सुदृढ़ राष्ट्र बनाने में मिकाडो ने जो महान् सफलता प्राप्त की, सरदार पटेल के कर्तृत्व का महत्त्व भी उससे कम नहीं है । जर्मनी और जापान तो उस समय चार-पाँच करोड़ की जनसंख्या के छोटे देश ही थे, पर सरदार ने तो उस भारत को एक कर दिखाया, जिसको विविधता और विस्तार की दृष्टि से अनेक लोग एक 'महाद्वीप' की संज्ञा देते हैं ।

इक्कीसवीं शताब्दी शाकाहार की

-मुजफ्फर हुसैन

हिंसा और मांसाहार के विभिन्न पहलुओं पर विचार कर लेने के पश्चात् इस मुद्दे पर चिंतन करने की आवश्यकता है कि आज जो दुनिया के पर्यावरण की स्थिति है, उसके अनुसार मनुष्य शाकाहारी बनकर जीवित रहेगा या फिर उसे मांसाहार अपनाकर अपना जीवन व्यतीत करना होगा ? प्रकृति का नियम है कि हर चीज अपनी असलियत पर लौटती है । यदि इसमें विश्वास करें तो फिर यह कहना होगा कि आदम और मनु का जीवन शाकाहर से प्रारंभ हुआ था, इसलिए उसकी संतानों को शाकाहारी बनना पड़ेगा । यदि वह शाकाहारी नहीं बनती है तो फिर जीवन कितना कठिन हो जाएगां, इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता । बिना शाकाहार के उसका अस्तित्व खतरे में है ।

किसी समय एक राजा के राज्य में जबरदस्त अकाल पड़ा । जनता दाने-दाने को तरस गई । भुखमरी हर दिन बढ़ती जा रही थी और लाशों के ढेर लग रहे थे । इस संकटकालीन स्थिति पर विचार करने के लिए राजा ने अपनी मंत्रिपरिषद् की बैठक बुलाई और सभी से पूछा कि इस स्थिति से किस प्रकार निपटा जाए ? कुछ मंत्रियों ने कहा कि अनाज नहीं है तो क्या हुा, हमारे राज्य में पशुधन बहुतायत में है । लोग यदि रोटी के स्थान पर मांस का भक्षण करने लगें तो समस्या का समाधान हो सकता है । हमारे पास इतने पशु हैं कि हम खाते-खाते अघा जाएँगे और तब तक तो वर्षाकाल आ ही जाएगा । इसलिए महाराज, आप तो सबको यही आदेश दीजिए कि रोटी छोड़कर सब लोग मांस खाएँ । बात लोगों को अच्छी लगी । अधिकांश मंत्रियों ने इसपर अपनी सहमति व्यक्त की । महाराज ने जब अपने प्रधानमंत्री की ओर देखा तो उनको चेहरे पर नाराजगी का भाव था । महाराज ने पूछा, 'प्रधानम्त्रीजी, आप इस प्रस्ताव से सहमत हैं ?' तब उन्होंने कहा, 'भूख से निपटने का मार्ग जो हमारे साथियों ने बताया है, उसपर मैं इस घड़ी अपनी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करूँगा । राजन्, अच्छा होगा कि मुझे आप कल तक का समय दें, ताकि इस सुझाव के हर पहलू पर मैं विचार करे अपनी राय दे सकूँ । राजा ने प्रधानमंत्री की बात स्वीकार कर ली और बुलाई गई बैठक को समाप्त कर दिया ।

जब रात्रि का अंधकार चारों ओर फैल गया तो प्रधानमंत्री वेश बदलकर नगर में निकल पड़े । उन्होंने राजवैद्य का वेश धारण कर लिया । वे सबसे पहले उस मंत्री के पास पहुँचे जिसने पशुवध के माध्यम से अकाल का सामना करने का प्रस्ताव रखा था । उसके घर में पहुँचकर अत्यंत निराश मुद्रा में बोले, 'क्या बताऊँ, हमारे प्रिय राजा एक अत्यंत खतरनाक बीमारी से पीड़ित हैं । उनके लिए जो औषधि तैयार करनी है, उसमें इनसान के हृदय का दो तोला रक्त चाहिए । मुझे विश्वास है कि राजा की जान बचाने के लिए आप अपना रक्त मुझे जरूर देंगे ।'

'लेकिन वैद्यजी, हृदय का रक्त देने का अर्थ है मेरी मौत । क्या आप यह काम किसी अन्य के रक्त से नहीं कर सकते ? आप से स्वर्णमुद्राएँ रखिए और मेरी जान वख्श दीजिए।' वैद्यजी ने स्वर्ण मुद्राएँ समेटीं और दूसरे मंत्री के पास पहुँचे, जो पशुवध के प्रस्ताव से सहमत थे । मंत्रीजी का मुँह उतर गया और उन्होंने भी वही सबकुछ किया जो पहले मंत्री ने किया था। यहाँ भी स्वर्णमुद्राएँ अपनी झोली में समेटकर वे आगें बढ़ गए । इस प्रकार उस बैठक में जितने लोग थे, सभी के पास पहुँचे और दो तोला खून की माँग रखी । वैद्यजी के पास स्वर्णमुद्राओं का ढेर लग गया । बहुत रात बीत जाने पर वे अपने घर लौट आए । दूसरे दिन फिर दरबार में वही सब लोग राजा के सम्मुख उपस्थित हुए । राजा ने अपने प्रधानमंत्री से पूछा, 'आपने विचार कर लिया ? अब मूख से निपटने का कोई अन्य मार्ग हो तो वह बताइए, नहीं तो पशुओं के कत्ल का फरमान जारी कीजिए ।' प्रधानमंत्री अपने स्थान से उठे । उन्होंने राजा को अभिवादन किया और बोले, 'यह तुच्छ प्रधानमंत्री आपको अपनी बात कहे, उससे पूर्व राजन् के सम्मुख कुछ भेंट देना चाहता है ।' राजा से आज्ञा मिलते ही उसने स्वर्णमुद्राओं की पोटली खोल दी । राजा और दरबारी अवाक् रह गए । इतनी सारी मुद्राएँ कहाँ से लाए ? प्रधानमंत्री बोले, 'ये सब आपके मंत्रियों से ही मुझे मिली हैं ? लेकिन कैसे ? तब उन्होंने बताया कि राजन् मैं रात को हर मंत्री के घर पर गया और दो तोला खून की माँग की । सबने स्वर्णमुद्राओं से मुझे लाद दिया, पर किसी ने दो तोला खून नहीं दिया । जब दो तोला खून की इतनी कीमत हो सकती है तो फिर विचार करें, भूख से निपटने के लिए हम प्रतिदिन जो सैकड़ों पशु मारेंगे, उनके खून का मूल्य क्या होगा ? अपनी जान के बदले तो सोने के सिक्के दे दिए, लेकिन इन मूक जानवरों के खून का पैसा कौन देगा ? राजा को सारी बात समझ में आ गई और उन्होंने पशु-हिंसा से इनकार कर दिया । दरबारियों को महसूस हो गया कि जान कितनी प्यारी होती है ।

यह कथा इस रहस्य को स्पष्ट कर देती है कि दुनिया में पशुधन कितना मूल्यवान् है । यदि कोई अपनी भूख के लिए इनकी बलि लेना चाहता है तो निश्चित ही वह एक अदूरदर्शी कदम है ।

बढ़ती जनसंख्या हेतु दो समय के भोजन के लिए यह वकालत की जाती है कि मांसाहार ही केवल इसका एकमात्र हल है । लेकिन जब गहराई से विचार करते हैं तब यह मालूम पड़ता है कि जिसे हम समाधान की संज्ञा दे रहे हैं, वास्तव में तो वही सबसे बड़ी समस्या है । भूख के कारण कोई मरता है तो यह सुझाव कुछ समय के लिए तो व्यवहारिक हो सकता है, लेकिन जब उसके भीषण परिणाम सामने आते हैं तब देश और दुनिया त्राहि-त्राहि पुकार उठती है ।

इक्कीसवीं शताब्दी की दो त्रासदी एक साथ देखने को मिल रही हैं । पिछले दो हजार वर्षों में मनुष्य की आबादी इतनी कभीं नहीं बढ़ी थी कि उसका जन-जीवन खतरे में पड़ जाए । मनुष्य अकेला इस धरती पर जीवित नहीं रह सकता । उसे जीवन देने के लिए पृथ्वी पर कुदरत ने अनेक वस्तुएँ बनाई हैं, जिन्हें वैज्ञानिक भाषा में पर्यावरण की संज्ञा दी जाती है । कुदरत ने जो कुछ भी बनाया है वह सब मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक है । उसमें से किसी वस्तु को कम करने का अर्थ

होगा इनसान की मौत को बुलावा देना। खाने, पहनने और रहने के लिए जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें तो मनुष्य अपनी निरीह आँखों से देख लेता है, लेकिन उसके लिए करोड़ों वस्तुएँ ऐसी हैं जिनको देख पाना और वे उसके अस्तित्व में क्या भूमिका अदा करती हैं, उसको समझ पाना बहुत कठिन है। मनुष्य को जीने के लिए पहली आवश्यक वस्तु प्राणवायु है। इन दिनों वैज्ञानिकों का कहना है कि वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो रही है। उसे नुकसान पहुँचानेवाले कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। इसके साथ ही ऐसी अन्य गैसों की मात्रा में भी वृद्धि हो रही है जो पर्यावरण के लिए बेहद नुकसानदायक हैं। इसके कारण हमारी धरती गरम हो रही है। यदि धरती गरम होती है तो पीने का पानी, जिसे हम मीठा पानी कहते हैं, उसका वाष्पीकरण होता है। यानी आदमी की पहली आवश्यकता संकट में है। पानी का दूसरा नाम जीवन है। इससे जंगल प्रभावित हो रहे हैं। यानी हरी-भरी जमीन रेगिस्तान बन रही है। वनस्पति के अभाव में जंगल में विचरनेवाले पशु और पक्षियों के जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। पीने के पानी के स्रोत मर्यादित होते ही हमारे नदी-नालों से लेकर विशाल समुद्र तक प्रभावित होंगे। ध्रुवों एवं पर्वतों पर जमी बर्फ पिघलकर जब समुद्र में जाएगी तो समुद्र के पानी की सतह ऊपर उठेगी, जिससे ज़मीन के अनेक भाग डूब जाएँगे। यानी हमारी धरती का क्षेत्रफल घट जाएगा। बढ़ती जनसंख्या और ग्लोबल वार्मिंग पर विचार करने के लिए अब तक तीन बड़े सम्मेलन विश्व स्तर पर हो चुके हैं। इन सम्मेलनों का नाम 'वसुंधरा सम्मेलन' दिया गया। राष्ट्र संघ के नेतृत्व में संपन्न रियोडीजोइनरो एवं काहिरा के सम्मेलनों की रपट से दुनिया चौंक गई है।

काहिरा सम्मेलन में विश्व के १८० देश शामिल हुए थे। इन सभी ने मिलकर इस बात पर चिंता व्यक्त की थी कि प्रतिवर्ष दुनिया में ९ करोड़ लोग बढ़ रहे हैं। दुनिया में आबादी न बढ़े, इसके उपाय करने हेतु १७ अरब डॉलर खर्च किए जाने की घोषणा की गई थी। रॉयल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित एक रपट में कहा गया है कि इस पृथ्वी पर लंबे समय तक जीवन बनाए रखने के लिए जितनी आबादी होनी चाहिए, उससे हमारी आबादी इस समय एक हजार गुना अधिक है। इस तथ्य पर भी विचार किया गया कि इस समय जितनी जनसंख्या है वह कितनी कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित कर रही है ? कितनी उर्जा का उपयोग किया जा रहै है ? उसे कितने भोजन की आवश्यकता है और वह कितने प्राकृतिक साधनों का दोहन कर रही है ? ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्राध्यापक विलियम रीस कहते हैं कि इसका मुख्य कारण हमारी प्रजनन-क्षमती है, जो खतरनाक रूप से बढ़ रही है। मनुष्य प्राकृतिक साधनों का दोहन न करके उसका शोषण कर रहा है। वर्तमान स्थिति नहीं बदली तो ऑक्सीजन और ओजोन दोनों ही कम होती चली जाएँगी। ओजोन की परत में जिस तरह से छेद हो रहे हैं उसने अनेक कठिनाइयों को बढ़ा दिया है। बिना ओजोन की परत के सूर्य का ताप क्या हम सहन कर सकेंगे ? ऐसा लगेगा कि दुनिया को जीते-जी श्मशानघाट में पहुँचा दिया है।

इक्कीसवीं शताब्दी आते ही हमने देखा कि सुनामी की लहर समुद्र से उठी और धरती के एक बड़े भाग को लील गई। सुनामी केवल एक स्थान पर नहीं आ रही है, उन स्थानों पर भी अब उसकी लहरें उठ रही हैं जहाँ कभी उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। तीन वर्ष पूर्व पूर्वी एशिया के अनेक देशों में यह तांडव देखने को मिला। अब भी वहाँ से उसका खतरा टला नहीं है। सवाल उटता है कि इस क्षेत्र में कभी सुनामी नहीं आई, फिर इस बार ऐसा क्यों हुआ ? समुद्र-विज्ञानियों का मत है कि समुद्र में रहनेवाले जीव समुद्र के नीचे की धरती का संतुलन बनाए रखने में महत्त्व की भूमिका निभाते हैं। जब समुद्री जानवर कम होने लगते हैं तब वह स्थिति बनती है। हिंद महासागर में इंडोनेशिया और उसके आस-पास के टापुओं से मछलियाँ और चीन, जापान तथा अन्य पूर्वी एशिया के देशों के खाने में उपयोग होनेवाले जलचर इतनी बड़ी संख्या में पकड़े गए हैं कि उनका सफाया हो गया है। इसे दुनिया में डीप फिशिंग क्षेत्र कहा जाता है। विश्व में यह भाग किसी समय मछली पकड़ने का आदर्श क्षेत्र कहा जाता है। विस्व में यह भाग किसी समय मछली पकड़ने का आदर्श क्षेत्र कहलाता था। क्योंकि इतनी असंख्य मछलियाँ दुनिया के किसी अन्य क्षेत्र में नहीं हैं। मछली पकड़ने के इस आधुनिक व्यवसाय को ब्लू क्रांति की संज्ञा दी जाती है। समुद्र के भीतरी भाग को संतुलित रखने के लिए जो जलचर महत्त्वपूर्ण हैं उनकी संख्या जब नहीं के बराबर हो गई तो कुदरत ने अपना काम किया और सुनामी जैसी मौत की लहर ने समुद्र किनारे बसी दुनिया को लील लिया। कितने लोग मरे, इसका ठीक से आँकड़ा अब तक सामने नहीं आया है। मनुष्य जो सबसे अधिक बुद्धिमान होने का दावा करता है वह तो तूफान की चपेट में आ गया, लेकिन धरती पर सैकड़ों जीव-जंतु थे, जो किसी-न-किसी तरह अपनी जान बचाने में सफल हो गए, क्योंकि उन्हें आभास हे गया था कि तूफान आनेवाला है। जमीन में छुपे साँप, चूहे जैसे अनेक प्राणी और इनसान की दुनिया में उसके साथ रहनेवाले कुत्ते-बिल्ली अपनी रक्षा करने में सफल रहे। इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि इन प्राणियों को समय से पहले खतरे का आभास हो जाता है। लेकिन बेचारा मनुष्य कुदरत के इस अधिशाप का बुरी तरह से शिकार हो जाता है। यानी जिन्हें हम पशु की संज्ञा देते हैं, उनके पास कोई ऐसी सूझ-बूझ है जिससे वे सावधान हो आते हैं, लेकिन समुद्र के इन करोड़ों जीवों को डकार जानेवाला इनसान बेबस होकर कुदरत के सामने अपना माथा झुका लेता है। इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि कौन सा प्राणी और कौन सी वनस्पति इस दुनिया को बचाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, उसे इक्कीसवीं शताब्दी का आदमी अभी पूरी तरह से जान नहीं पाया है। इसमें कोई शंका नहीं है कि आसंख्य वैज्ञानिक खोजों ने मानव को सुरक्षा प्रदान की है; लेकिन जब कुदरत नाराज होती है और बड़ा तूफान आता है उस समय मनुष्य आज भी लाचार ही दिखाई पड़ता है। कितनी मछलियाँ मारी जाएँ और जो अन्य जलचर, जिन्हें मनुष्य अपने भोजन का निवाला बनाता है, उनमें कितने शेष रहने चाहिए, अभी उसका हिसाब विज्ञान को करना बाकी है। जिस दिन मनुष्य यह सब कर सकेगा, उसकी सुंदर दुनिया को नष्ट करने के लिए कुदरत का कहर बरपा नहीं होगा। इसलिए अब हिंसा और अहिंसा के होनेवाले परिणामों से सारी दुनिया को अवगत कराना होगा और उन्हें बचाए रखने के लिए हमारी

व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करना होगा। ज्वालामुखी सुलगने लगे हैं। जो कल तक मृतप्राय हो गए थे, वे फिर से सक्रिय हो रहे हैं। भूकंप के झटकों में लगातार वृद्धि हो रही है। उसमें केवल इनसान दफन नहीं होता बल्कि वह कुदरत भी दम तोड़ देती है, जिसके सहारे पर्यावरण तैयार होता है, जिसमें इनसान साँस लेता है।

विचार कीजिए, दुनिया में जहाँ बड़े कत्लखाने हैं, वहीं पर भूकंप क्यों आते हैं? पिछले दिनों कभी भुज में भूकंप आया तो कभी महाराष्ट्र के उस भाग में, जो आँध्र से जुड़ा हुा है। भारत में अलकबीर के बूचड़खाने से कौन परिचित नहीं है, जो रुद्रारम में हैदराबाद के निकट स्थित है। जब उस परिसर में भूकंप आया तो महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले तक को उसने हिलाकर रख दिया। किल्लरी नगर की किलकारियाँ इनसान की चीख और रुदन में बदल गई। दुनिया में जहाँ बड़े कत्लखाने हैं, वहाँ भूकंप आते रहने के क्या कारण हैं? दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के विज्ञान विभाग से जुड़े दो प्राध्यापक डॉ. बजाज और डॉ. अब्राहम जानवर, जो इन कत्लखानों में काटे जाते हैं, उनकी चीख न केवल वातावरण में अपितु धरती की परत को चीरकर भीतर तक पहुँचती है, जहाँ हर क्षण उठती रहनेवाली तरंगों का तापक्रम बढ़ जाता है। एक समय ऐसा आता है कि उक्त तरंगें जमीन को चीरकर बाहर निकल आती हैं, जो हमारे शब्दों में भूकंप है। तुलसीदासजी ने तो स्पष्ट लिखा है-

''तुलसी हाय गरीब की कभी न खाली जाय।

ज्यों मुए खाल की चाम से लौह भसम हो जाय॥''

डॉ. बजाज और अब्राहम जैसे वैज्ञानिकों ने केवल तुलसी के विचार को विज्ञान का स्वर दिया है, जिसे दुनिया बहुत पहले से जानती है।

कुल मिलाकर पृथ्वी के अंदर और बाहर उथल-पुथल मची हुई है। यदि यह सब होता रहा तो फिर इनसान के जीवित रहने की क्या गारंटी है। मेसोपोटामिया, सिंध और मिस्त्र की सभ्यताएँ जिस तरह से नष्ट हो गई, लगता है कि अपोलो यान और अंतरिक्ष विजय की ललक रखनेवाली वर्तमान सभ्यता भी अंधकार के गर्त में विलीन हो जाएगी।

दुनिया ने अब तक दो महायुद्ध देखे हैं। तीसरा महायुद्ध कब होगा, यह तो फिलहाल कहना कठिन है। लेकिन वैज्ञानिकों का कहना है कि तीसरा महायुद्ध पानी के लिए होगा। चीन के चार सौ नगरों में पानी का अभाव है। चीन अपने पानी की कमी को पूरा करने के लिए हिमालय के ग्लेशियरों की दिशा चीन की ओर मोड़ने का सतत प्रयास कर रहा है। यानी हिमालय की बर्फ से वह अपना पानी का अभाव पूरा करना चाहता है। शंघाई से ल्हासा तक उसने रेल शुरू कर दी है। पूर्व में हमारे अरुणाचल प्रदेश में भी वह इसी प्रकार की गतिविधियाँ चला रहा है। भारत के इन भागों पर कब्जे की नीयत तो है ही, लेकिन उससे अधिक लक्ष्य हिमालय के पानी के प्रवाह को अपनी ओर मोड़ना है तथा इस पानी को रेलों के द्वारा अपने बड़े नगरों तक ले जाना है। गरमी शुरू हेने से पहले भारत में हम देखते हैं कि पानी के लिए शोर मचने लगता है। सऊदी अरब ने तो पानी की कमी को पूरा करने के लिए उत्तरी ध्रुव से बड़े आइसबर्ग खींचकर अपने बंदरगाह तक लाने की योजना बनाई थी। इसके लिए एक कंपनी भी सऊदी राजकुमारों ने स्थापित की थी। लेकिन लाल सागर इतना कम गहरा है कि उसके आइसबर्ग समुद्र के पेंदे में ही बैठ गए। इसलिए उनको खींचकर लाना कठिन हो गया। यानी हर देश पानी की समस्या से निपटने के लिए योजनाएँ बना रहा है। लेकिन भारत में जो पानी उपलब्ध है, वह कहाँ जा रहा है, इसपर क्या कभी हमने विचार किया है?

भारत में पेय के लिए उपयोग होनेवाला पानी १,१५० क्यूबिक किलोमीटर प्राप्त है, जिसमें ४५० क्यूबिक किलोमीटर भूमिगत और ७०० क्यूबिक किलोमीटर भूतल जल है। इस पानी की खपत सबसे अधिक कत्लखानों में होती है। अलकबीर प्रतिवर्ष ४८ करोड़ लीटर पेयजल का उपयोग करता है। मुंबई का देवनार ६४ करोड़ ८४ लाख गैलन। देश में ५,००० लाइसेंस प्राप्त कत्लखाने हैं। कितने अवैध कत्लखाने हैं, इसका पता तो आप अपने नगर में भ्रमण करके लगा सकते हैं। विचार कीजिए कि आपका अमूल्य पानी कत्लखानों को साफ करने, काटे गए पशुओं को धोने और उन्हें बर्फ में पैक करके विदेश भेजने में चला जाता है। पानी के बचाने के लिए लोग आह्वान करते हैं, क्या इसपर काम करनेवाली संस्थाओं ने इन वैध और अवैध कत्लखानों की ओर रुख किया है? भारत में लगातार मांस उद्योग बढ़ रहा है। अब हम डेरी डेवलपमेंट मंत्रालय नहीं चलाते बल्कि मटन एक्सपोर्ट विभाग चलाते हैं। हमारे दुर्लभ पशुओं के साथ हमारा अमृत समान पानी भी इस हिंसा के उद्योग में खर्च हो रहा है।

इस उथल-पुथल में हमारी धरती पर कितने जंगल बचेंगे और ऐसी कितनी जमीन बचेगी, जिस पर इनसान खेती कर सकेगा? यदि खेती के लिए जमीन का अभाव रहेगा तो फिर वे पशु, जिनका दूध और मांस का उपयोग कर आदमी अपना जीवन गुजारता है, उनके लिए कितनी चरागाह शेष रहेगी? जब पशु के लिए चारा नहीं होगा और उसके पीने का पानी कम होता चला जाएगा तो वह किस प्रकार जीएगा? यानी उसकी संख्या घटना तय है। यदि पशु कम होते चले जाते हैं तो फिर मांस का स्त्रोत क्या होगा? वे पशु-पक्षी, जिन्हें आज निर्दयता से इनसान काटकर खा जाता है, वे शेष ही नहीं रहेंगे और नए जन्म लेने के अवसर भी घट जाएँगे। तब विचार करें, मांसाहारी लोग क्या करेंगे? कुल मिलाकर वनस्पति, चारा और जंगल में उगनेवाली अन्य वस्तुएँ नहीं होंगी तो हमारी गाय, भेड़, ऊँट, बकरे-बकरी और वे अन्य पशु-पक्षी, जिनका मांस आरोग्यकर है-आज की दुनिया जीवित रहने का दावा करती है, उनके सारे दावे धूल-घूसरित हो जाएँगे। कुल मिलाकर यह सिद्धांत सामने आता है कि मांसाहार करनेवाले शाकाहारी पशु-पक्षियों पर निर्भर हैं। बढ़ती आबादी में खाने के लिए अनाज अधिक उगाना होगा। अब यदि जमीन के जिस भाग से पशुओं को आहार मिलता है, मनुष्य उन पर खेती करने लगेगा तो फिर ये पशु क्या खाएँगे? पशुओं को उनका आहार नहीं मिलेगा तो वे जीवित कैसे रहेंगे? कुछ ही समय बाद उनकी नस्ल और वंश समाप्त हो जाएंगे? मांसाहार करनेवालों को याद रखना चाहिए कि उनका आधार शाकाहार है। पेड़-पौधे उगाने, उन्हें पल्लवित करने और खान-पान में उनके उपयोग करने पर पानी की मात्रा अधिक लगती है या फिर किसी पशु को बड़ा करने में पानी की मात्रा अधिक

चाहिए। पहली नजर में कोई भी कह सकता है कि पशुतो तैयार है, आप जब चाहें और जहाँ चाहे उसका उपभोग कर सकते हैं। लेकिन पशु को बड़ा करने में जो उसे खिलाया गया, उसे उगाने में कितना पानी लगा होगा और जीने के लिए उसे प्रतिदिन पीने के पानी की कितनी आवश्यकता पड़ी होगी, यह तथ्य बहुत जल्दी सामने नहीं आता। २१वीं शताब्दी की बढ़ती जनसंख्या को यदि हम मांसाहार के आधार पर जीवित रख सकते हैं तो पानी आपको अधिक-से-अधिक मिले, इसकी तैयारी करनी होगी। यदि पानी नहीं है तो फिर शाकाहार की शरण में आए बिना कोई विकल्प नहीं है।

किसान भली प्रकार जानता है कि उसके खेत को कितनी बार सींचना पड़ता है। किसान अंतराल से उसमें पानी देता रहता है। कोई भी फसल हो, आपको प्रतिदिन उसे नहीं सींचना पड़ता। किसी भी फलदार वृक्ष को भी एक निश्चित समय पर निश्चित मात्रा में ही पानी देना पड़ता है। इजराइल चारों ओर रेगिस्तान से घिरा है। वहाँ पानी के स्त्रोत बहुत कम हैं। लेकिन फिर भी अपने पड़ोसी अरब देशों की तुलना में वह अधिक अन्न उत्पन्न करता है। उसका कारण है कि वहाँ के कृषि निष्णात जानते हैं कि किस पौधे और झाड़ को कितना पानी देना है। इसलिए इजराइल अपनी राष्ट्रीय आवश्यकता अपने ही स्त्रोतों से पूर्ण कर लेता है। लेकिन उसने कभी पशु-पालन के धंधे को प्रोत्साहित नहीं किया। वह जानता है कि उन पशुओं की प्यास बुझाने के लिए उसके पास इतनी बड़ी मात्रा में पानी नहीं है। खेतों में उगाई जानेवाली फसल को तो फिर भी पानी देना पड़ता है, लेकिन वनस्पति जिनमें फलवाले वृक्ष बड़े हो जाने पर उन्हें पानी नहीं देना पड़ता, वे स्वयं ही अपनी जड़ों से पानी प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन एक पशु छोटा हो या बड़ा, उसे पालने और बड़ा करनेके लिए प्रतिदिन पानी चाहिए। पानी की कमी और अभाव की स्थिति में पेड़ तो उगाए जा सकते हैं, लेकिन पशुओं का पालन नहीं हो सकता। पेड़ों में यहकुदरती बात है कि वे स्वयं भी पानी जमीन से प्राप्त कर लेते हैं और अपने आस-पास की जमीन में भी नमी बनाए रखते हैं। वृक्ष वातावरण को ठंडा बनाते हैं और पानी से भरे बादलों को अपनी ओर खींचते हैं, क्योंकि उनमें क्लोरोफिल नामक तत्त्व होता है, जो हमेशा उन्हें हरा रखने में सहायक होता है।

वनस्पति और पशु दोनो के जीवन में कितना पानी चाहिए, उसके तुलनात्मक आँकड़े चौंका देनेवाले हैं। एक ब्रिटिश वैज्ञानिक ने लागातार प्रयोग करके कुछ नतीजे प्राप्त किए हैं। १ पौंड गेहूँ के उत्पादन में २५ गैलन पानी की आवश्यकता होती है। १ पौंड टमाटर के उत्पादन के लिए २३ गैलन पानी चाहिए। इसी प्रकार १ पौंड आलू को पैदा करने में २३ गैलन पानी की आवश्यकता होती है। सबसे अधिक पानी चावल को चाहिए। १ पौंड चावल के लिए ११० गैलन पानी खर्च होता है, जबकि गन्ने को इससे भी अधिक पानी लगता है, जिसकी मात्रा १७० गैलन है। मक्का के लिए ८० और केले के लिए २०० गैलन पानी अनिवार्य है। सबसे कम पानी चनेके लिएचाहिए, मात्र ११ गैलन। भारत में तो जिस भूमि में नमी होती है वहीं चने की फसल लेनें में पानी की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

कुछ आँकड़े अब पशु जगत् के देखिए कि उन्हें बड़ा करने में और साथ ही उनकी आयु के साथ मांस और हाड़ में वृद्धि होते समय कुल कितना पानी खर्च होता है? जो गऊ हमें दूध से लगातार गोबर तक का वरदान देती है उसके शरीर पर १ पौंड मांस की वृद्धि के लिए ४,२१४ गैलन पानी खर्च होता है। सुअर के मांस के लिए प्रति पौंड ८१५ और बकरा-बकरी के लिए ६०० गैलन पानी प्रति पौंड चाहिए। सबसे अधिक ऊँट के शरीर की वृद्धि में पानी खर्च होता है, जिसमें १ पौंड के लिए ८,००० गैलन पानी खर्च होता है। मांसाहारियों को जो पशु सस्ता लगता है, उसके पालन-पोषण में प्रकृति को किस प्रकार अपनी अमूल्य वस्तु की भेंट देनी पड़ती है, यह स्पष्ट हो जाता है। बेचारा पशु तो मरने के बाद एक ही बार अपनी वस्तुओं का दान करता है, लेकिन पेड़ और वनस्पति तो जीवन भर अपनी विरासत से मनुष्य समाज को लाभान्वित करती रहती है। पशु की चिंता तो हर समय करनी पड़ती है, लेकि इन वृक्षों की चिंता तो केवल और केवल नैसर्ग नाम का प्रहरी बिना कुछ लिये ही मुफ्त में करता रहता है। गरीब देश के लिए पशु-पालन महँगा धंधा है, जबकि कृषि इस तुलना में सस्ती भी है और अधिक लाभदाय भी। २१वीं शताब्दी पानी के संकट की शताब्दी होगी, इसलिए अब समय आ गया है कि मनुष्य इस बात का फैसला करे कि उसे जीवित रहना है या नहीं। जीवन चाहिए तो शाकाहार एकमात्र विक्लप है और मौत चाहिए तो रक्त के सौदागर बनकर हमारी सुंदर वसुंधरा को सूली के तख्ते पर चढ़ा दीजिए।

मांसाहार जगत् की एक और शोकांतिका है कि उसके व्यापारी अपना माल अधिक-से-अधिक सप्लाई करने के लिए पशु-पक्षियों को कृत्रिम रूप से पैदा करने के प्रयत्न में संलग्न हैं। लेकिन प्रकृति को यह स्वीकार नहीं है। हाइब्रिड एनीमल हर जगह देखने को मिल रहे हैं। लेकिन पिछले कुछ समय से ऐसा अनुभव मिल रहा है कि इसका प्रभाव उलटा पड़ता है और पशु-पक्षी बीमारी से पीड़ित होकर करोड़ों की संख्या में मरने लगते हैं। पिछले दस साल में दो बड़ी त्रासदी देखने को मिली हैं। एक तो मेड काऊ की और दूसरी बर्ड फ्लू की। जब इन बीमारियों के भीतर झाँकते हैं और परिस्थिति का विश्लेषण करते हैं तब पता लगता है कि अधिक-से-अधिक गाय का दूध प्राप्त करने और बड़ी संख्या में मुरगियों का व्यापार करने की ललक ने इस प्रकार की भयंकर बीमारियाँ पैदा की हैं। बर्ड फ्लू तो २००५-००६ की घटना है। एक सप्ताह में भारत के कुछ ही राज्यों में २५ लाख मुरगियाँ मर गईं। उनके व्यापारियों का कहना है कि उन्हें ५० हजार करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है। यह बीमारी थाईलैंड से भारत में घुसी। थाईलैंड ने तो तुरंत दवा खोज ली और उसपर रोक लगाने में कुछ हद तक सफलता प्राप्त कर ली, लेकिन भारत में ऐसा नहीं हो सका। यह भी एक ध्यान देने योग्य बात है कि सुनामी की लहर भी पूर्वी और दक्षिण एशिया में आती है और बर्ड फ्लू भी इसी क्षेत्र में फैलता है। दुनिया का यह सबसे घनी आबादीवाला क्षेत्र है। इसलिए प्रकृति किसी-न-किसी प्रकार इनसानों की जनसंख्या को संतुलित रखना चाहती है। जब आदमी अपनी संख्या को मर्यादित नहीं करता है तो फिर माल्थस का सिद्धांत लागू होता है। कुदरत अपने ढंग से अपना काम करती है और जितनी जनसंख्या चाहिए, उसे सीमित और

मर्यादित करने के लिए मनुष्य को मौन भाषा में अपना संदेश देती है। भिन्न-भिन्न बीमारियों से लोग मरने लगते हैं। कहा जाता है कि बर्ड फ्लू नामक बीमारी इन्फ्लुएंजा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। मुरगी की इस बीमारी के कीटाणु उसके मल में होते हैं। किसी भी चिकन शॉप पर जाकर देख लीजिए, जिस पिंजरे में ५० मुरगियों के रहने का स्थान होता है वहाँ आपको दुगुनी मिल जाएँ तो आश्चर्य नहीं। किन शॉप कितनी गंदी होती है। मुरगी की टाँगें, आँत, पंख और मुंडियाँ उसमें पड़ी रहती हैं। इस गंदगी से कीटाणुओं का जन्म लेना, बढ़ना और फैलना स्वाभाविक है। जिस पोल्ट्री फार्म में ये कीटाणु हैं, वहाँ से इस गंदगी को गाड़ी में भरकर इनसानों की बस्ती में लाया जाता है। इनपर कोई कानून लागू नहीं होता। न तो उनके अलग से मार्केट हैं और न ही उनकी साफ-सफाई का कोई प्रबंध। इन बीमार मुरिगियों का मांस बड़े पैमाने पर खाया जाता है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि बकरे के मांस की तुलना में यह सस्ता है। मुरगी छोटा प्राणी है, इसलिए तक स्थान से दूसरे स्थान तक लने-ले जाने में कोई कष्ट नहीं होता। उसका भाड़ा भी सस्ता होता है। इसलिए मांसाहारी उसका बड़े पैमाने पर उपयोग करते हैं। जब यह बीमारी फैली उस समय ७० लाख लोग मुरगी का मांस खाने से बीमार हुए। उक्त आँकड़ा एक अंतराष्ट्रीय संस्था ने दिया है। बीमार मुरगी का अंडा भी इन कीटाणुओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। केवल एशिया में प्रतिदिन ३ करोड़ मुरगियों को कत्ल किया जाता है। अंडे खानेवालों की तादात ५० करोड़ से भी अधिक है। विश्व में मुरगी और उसके अंडे का सर्वाधिक सेवन होता है। बीमार पक्षी उसे आरोगनेवाले के स्वास्थ्य की रक्षा किस प्रकार कर सकेगा, यह निजी नहीं बल्कि राष्ट्रीय और मानवीय चिंता का सवाल है। पाँच वर्ष पूर्व ब्रिटेन में गायों को पागल कर देनेवाली बीमारी फैली। बतलाया जाता है कि कुल दो लाख गायों का कत्ल हुआ। उक्त बीमारी, जिसका नाम 'मेड काऊ' दिया गया, इंग्लैंड तक ही सीमित नहीं रह सकी बल्कि यूरोप के अन्य देशों में भी फैल गई। पागल गायों का कोई मांस खाएगा तो परिणाम यही होगा कि खानेवाला भी पागल हो जाएगा। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने इन गायों का कत्लेआम करवा दिया। पाकिस्तान की 'फैमिली' नामक पत्रिका ने २००३ में मनाई जानेवाली बकरा ईद के अवसर पर यह समाचार दिया था कि कराची की पशु मंडी से कुछ गायें खरीदी गईं, जिनमें मेड काऊ की बीमारी के चिह्न थे। पाकिस्तान सरकार ने बड़ी संख्या में इन गायों को मरवा डाला। यह बीमारी इतनी भयंकर बताई गई कि कत्ल की गई गायों को गहरे गड्ढों में दफना दिया गया।

सवाल यह पैदा होता है कि वे गायें पागल क्यों हुईं ? इन दिनों पशुओं को खिलाए जानेवाले आहार में यह लक्ष्य निर्धारित किया जाता है कि उनसे अधिक-से-अधिक दूध प्राप्त हो। पशुओं की हड्डियों, सींग और खुर को डायजेस्टर में पकाकर उन्हें ग्रिस्टींग मशीन पर पाउडर के रूप में तैयार कर लिया जाता है। इसे एनीमल फीड की संज्ञा दी जाती है। इस आहार के कारण पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ जाती है। साथ ही उससे उनके शरीर पर मांस भी अधिक मात्रा में चढ़ जाता है। लेकिन जीवित गाय को मृत गाय के अंगों से बना ऑयल केक खिलाया जाएगा तो इसका क्या परिणाम आएगा ? एक दिन तो वह पागल हो ही जानेवाली है। हड्डियों से तैयार किया गया एनिमल फीड मुरगियों और मछलियों को भी खिलाया जाता है। इससे उनकी प्रजनन-शक्ति बढ़ती है। लेकिन कुछ समय बाद उसकी प्रतिक्रिया देखने को मिलती है। अपने जैसे पशु-पक्षी और अपनी ही नस्ल और वंश के शरीर से बने इस प्रकार के खाद्य पदार्थ का प्रभाव उलटा होने लगता है, जिससे पशु-पक्षी बड़ी संख्या में मरने लगते हैं। एनिमल फीड बनानेवाली इन कंपनियों की कोई जाँच-पड़ताल नहीं करता और प्रयोगशाला में उनकी शिकायत नहीं होती। इसलिए करोड़ों के वारे-न्यारे हो जाते हैं। इसका प्रभाव समय-समय पर देखनेको मिलता है। कभी असंख्य मछलियाँ मरती हैं तो कभी मुरगियों की लाशें बिछ जाती हैं। गाय जैसा प्राणी भी इसका शिकार हो जाता है। एक ही नस्ल के पशु अपने ही नस्लवाले को खाएँगे तो परिणाम क्या होगा ? मांसाहार करनेवाले यदि भूल से भी इन बीमार प्राणियों का मांस आरोग लेंगे तो क्या नतीजा होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

सन् १९१८ में इस प्रकार की बीमारी सुअरों में फैली थी। कितने करोड़ सुअर मरे, इसका हिसाब नहीं मिलता। लेकिन संपूर्ण यूरोप त्राहि-त्राहि पुकार गया था। आज भी सुअरों को जिन फार्म में रखा जाता है, उन्हें ऐसी वस्तुएँ खिलाई जाती हैं जिससे उसके शरीर पर चरबी बढ़ती रहे। कभी-कभी तो इन प्राणियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने में कठिनाई होती है। इसी प्रकार की बीमारी सन् १९३१ में घोड़ों में फैली थी। १९५५ में इन्फ्लुएंजा के कारण करोड़ों पक्षी मरे थे, इसका भी दिल दहला देनेवाला इतिहास मौजूद है। इनमें कबूतर जैसा भोला पक्षी भी चपेट में आ गया था।

इक्कीसवीं शताब्दी विज्ञान और तकनीक की शताब्दी है। सूचना का अधिकार लोगों को मिले, इसकी माँग होने लगी है। भारत जैसे देश ने इस कानून को अपना लिया है। इसलिए अब कोई छिपने-छिपानेवाली बात नहीं है। कोई व्यक्ति अपनी आदत और परंपरा के अनुसार मांसाहारी है तो कानून के तहत वह सुरक्षित है। इनसान क्या खा रहा है और किस प्रकार की वस्तुएँ खा रहा है, इसका ध्यान रखने की हर सरकार की जिम्मेदारी है। कल तक तो मांस के भक्षण से हृदयाघात, कैंसर और ब्रेन हैमरेज जैसी बीमारियाँ ही होती थीं, लेकिन अब तो इन बीमारियों की गिनती करना कठिन है। हर रोज आदमी को बीमार करनेवाली नई-नई बीमारियाँ कुकुरमुत्ते की तरह से फूट रही हैं। इक्कीसवीं शताब्दी चूँकि जागरूकता की शताब्दी है, इसलिए अपना जीवन और स्वास्थ्य सुरक्षित रखने के लिए हर इनसान शाकाहार की ओर आकर्षित होगा, ऐसा नतीजा आना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा। आहार पर हम कितना ही धर्मका मुलम्मा चढ़ाएँ, लेकिन वास्तविकता यह है कि शाकाहार अपनाकर और दीर्घायु होकर अपने धर्म की सेवा करना ही इस शताब्दी का मानव धर्म बननेवाला है।

भद्रभावना

-प्रो. विष्णुदयाल

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव ।। यजुर्वेद ३०-१

अर्थ - हे प्रेरक प्रभो ! सब बुराइयों को दूर कीजिए । जो कल्याण-कारक वस्तु हो, वह हमारे लिए दिलाइये ।

यह ऋषि दयानन्द का प्रियतम मन्त्र है । अपने वेद-भाष्य के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में ऋषि ने इसी मन्त्र से ईश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना की है । अन्य किसी भी मत-मतान्तर का माननेवाला मनुष्य इस मन्त्र द्वारा बिना संकोच के प्रार्थना कर सकता है । इस प्रकार की प्रार्थना सब प्रकार की सम्प्रदायिकताओं से मुक्त है । सभी 'दुरित' से बचना चाहते हैं और 'भद्र' को ग्रहण करना चाहते हैं ।

इस मन्त्र में तीन विशेष शब्द हैं जिनके अर्थ विचारणीय हैं । एक 'सविता', दूसरा 'दुरित' और तीसरा 'भद्र' । प्रार्थना का अर्थ है प्र+अर्थना' का अर्थ है माँगना । प्रार्थी उसी वस्तु को उत्कण्ठा से माँगता है, जिसका मूल्य उसको ज्ञात होता है, और जिसको पा जाना उसकी शक्ति के भीतर है । भूखा भिकारी रोटी माँगता है; वह अमेरिका के राज की कामना नहीं करता । अज्ञान से अप्राप्य वस्तु की कल्पना हो सकती है, कभी-कभी इच्छा भी, परन्तु इसको प्रार्थना नहीं कह सकते । प्रार्थना के लिए आन्तरिक उत्कण्ठा या विह्वलता आवश्यक है । उसके लिए यह जानने की आवश्यकता है कि वह क्या वस्तु है जिसकी हमको माँग है । बच्चा भूख से व्याकुल होकर चिल्लाता है । यह उसकी सबसे सच्ची प्रार्थना होती है ।

अर्थ समझे बिना प्रार्थना करना अपने को धोखा देना है । जिस वस्तु को आप जानते ही नहीं, उसको प्राप्त करने की इच्छा किस प्रकार हो सकती है ? और यदि वह वस्तु प्राप्त भी हो जाय, तो उससे आपको लाभ क्या हो सकता है ?

संसार में लोग मोक्ष या स्वर्ग के लिए सबसे अधिक प्रार्थना करते हैं । वे नहीं जानते कि मोक्ष क्या वस्तु है, या स्वर्ग कैसा और कहाँ है । ऐसी अज्ञात प्रार्थनाएँ मोक्ष के स्थान में बन्ध, और स्वर्ग के स्थान में नरक की प्राप्ति ही कराती हैं, अतः प्रार्थी को 'दुरित' और 'भद्र' के अर्थों को जानना चाहिए ।

दुरित=दुः+इत ('इण' गतौ से 'क्त' प्रत्यय करके 'इत' बना है), 'इत' में 'दुः' लगा देने से 'दुरित' बना । सायण ने 'दुरितम्' का अर्थ किया है **''अज्ञानात् निष्पन्नं''** (देखो ऋग्वेद-भाष्य १-२३-२२) और 'दुरितानि' का 'पापानि' (देखो ऋग्वेद-भाष्य २-२७-५) । आप्टे ने 'दुरित' का अर्थ किया है डिफ़िकल्ट (कठिन), सिनफुल (पाप), ए बैड कोर्स (बुरा मार्ग) । धातु और प्रत्यय पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि मार्ग में जो कुछ बाधाएँ उपस्थित हैं, वे सब 'दुरित' हैं । आप कहीं पर पहुँचने के लिएकोई मार्ग खोजते हैं । यदि मार्ग अच्छा है तो यात्रा सुगम होती है । यदि मार्ग में काँटे हों तो यह 'दुरित' है; यदि ईंट-कंकड़ के रोड़े होंतो यह 'दुरित' है; यदि झाड़-झंखाड़ हों तो यह दुरित है; यदि बीच में नदी-नाला आ जाय तो यह 'दुरित' हो; यदि आपके पैरों में थकावट आ जाय और आपको यात्रा के बीच ही बैठ जाना पड़े तो यह 'दुरित' है; यदि मार्ग में डाकू मिल जायँ तो यह 'दुरित' है ।

सारांश यह कि आपकी जीवन-यात्रा में जोबाधाएँ पड़ती हैं, वे सब दुरित हैं । मंज़िल एक है, मार्ग भी एक है, परन्तु बाधाएँ अर्थात् दुरित बहुत-से हैं । आपकी जीवन-यात्रा आपके जन्म से आरम्भ होती है-आरम्भ से ही दुरित भी आ उपस्थित होते हैं । शैखवकाल के अनेक रोग आपके मार्ग को रोकते हैं । यह दुरित है । बड़ा होने पर जिस कार्य में आप हाथ डालते हैं, उसमें कभी कोई वस्तु बाधक हो जाती है, कभी आपकी अविद्या, कभी आपका प्रमाद, कभी आपका लोभ, कभी किसी बाहरी शक्ति का विरोध-ये सभी तो दुरित हैं । यदि इनमें से एक छोटा-सा दुरित भी शेष रह गया तो आपकी जीवन-यात्रा असम्भव हो सकती है । आपका समस्त शरीर सुदृढ़ और रोगरहित हो, केवल पैर की सबसे छोटी उँगली के एक किनारे पर सरसों के बराबर फोड़ा हो जाय, तो आप देखेंगे कि आपका सारा काम ठप्प हो जाएगा ।

यदि आप राजा हैं तो आप अपने दुर्ग की दीवारें ऐसी चौड़ी और सुदृढ़ बनवाते हैं, जिनका तोड़ना किसी शत्रु की शक्ति से बाहर हो । यदि आपके दुर्ग के कई मील के सुदृढ़ घेरे में एक स्थान पर, एक हाथ की लम्बाई में एक स्थान दुर्बल रह गया है, तो उस हाथ-भर जगह पर से होकर ही शत्रु का प्रवेश हो सकता है और आपका साम्राज्य सहज ही अस्तव्यस्त किया जा सकता है । इसीलिए वेद में **'दुरितानि'** के साथ **'विश्वानि'** विशेषण लगाया गया है । जब आप भगवान् से दुरितों को दूर करने की प्रार्थना करते हैं तो 'विश्वानि' पर विशेष बल दें ।

'यद् भद्रं' अर्थात् जो भद्र या कल्याणकारक होवे । भद्र क्या है ?-'दुरितों' का दूर करना ही भद्र है । महामुनि गौतम ने न्याय-दर्शन में दो सूत्रों द्वारा इस रहस्य को समझाया है-

बाधना लक्षणार्थं दुःखम् ।
तदत्यन्तविमोक्षो अपवर्गः ।।

(न्यायदर्शन १-१-२१,२२)

अर्थात् रुकावट ही दुःख है । दुःख ही को 'दुरित' कहते हैं- (दुः+ख=दुःख, दुः+इत=दुरित) । 'ख' नाम इन्द्रिय का भी है और आकाश का भी । आकाश में गति सम्भव है । इन्द्रियाँ भी आकाश में ही गतिवती हो सकती हैं । जिन वस्तुओं द्वारा इन्द्रियों की नैसर्गिक प्रगति में रुकावट होती है, वही दुःख है, वही दुरित है; उससे 'अत्यन्त विमोक्ष' का नाम अपवर्ग है, अर्थात् कोई रुकावट शेष न रह जाय । रुकावटों के निश्शेष होने पर जो स्थिति होगी, वही 'भद्र' है । उसी की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है । इस मन्त्र में ईश्वर को 'देव सवितः' कहकर पुकारा गया है । 'सविता' सवितृ शब्द के अर्थों पर विशेष विचार करना है । 'सविता' का सम्बन्ध 'परासुव' और 'आसुव' दोनों से है, क्योंकि ये दोनों शब्द एक ही धातु 'पू' के सूचक हैं । सविता का अर्थ है 'प्रसविता' अर्थात् प्रेरक । मोनियर विलियम्स ने अपने 'बृहत्

संस्कृत कोष' में 'सव' का अर्थ दिया है- "One who sets in motion, impels, an instigator, a stimulator." और 'सविता' का अर्थ दिया है- "A stimulator, rouser, vivifier." हमने ये अंग्रेजी-अर्थ इसलिए दिये हैं कि साधारण हिन्दी भाषा में हम सब प्रसव, सविता, प्रसविता के मुख्य धात्वर्थ की उपेक्षा कर जाते हैं। ऋग्वेद के पाँचवें मण्डल में ८२वें सूक्तक में ९ मन्त्र हैं। उन सबके देवता सविता हैं और हर मन्त्र में सविता के साथ 'षू' धातु के किसी-न-किसी रूप का प्रयोग हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि सविता और उसके सम्बन्धी 'परासुव' और 'आसुव' विशेष अर्थों के सूचक हैं।

स्व. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी के दर्शन मैंने सन् १९३९ में प्रयाग में किये थे। उपरिलिखित अर्थादि उनकी विद्वत्ता का प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे कि साधारण-से-साधारण जन मन्त्र का भाव समझ पाए। उसके लिए यह जोड़ दिया जाता है कि पुराने वस्त्र पर पड़े रंग के स्थान पर यदि नया रंग चढ़ाना हो, तो पहले वस्त्र को धोकर एकदम साफ़ कर लेना चाहिये। तभी उस पर नया रंग चढ़ पाएगा। जब हम पहले अपनी बुराइयों को दूर करेंगे, तभी तो भलाई करने की सम्भावना होगी!

परमेश्वर रंगरेज़ है। मन-रूपी कपड़ा साफ़ हुआ कि उससे हम यह कहने की स्थिति में होंगे-संगवाले! देर क्या है? रंग दे!

महर्षि सच्चे योगी थे। उन्हें यह डर था कि कहीं चूक न जाऊँ। उन्होंने स्वयं को पवित्र रक्खा। गांधी जी मोरिशस से होकर भारत गए थे। जब उन्हें फिर दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा तो लाहौर से बाबा छज्जूसिंह ने उन्हें स्वरचित स्वामी दयानन्द का जीवन-चरित भेजा। बस, क्या कहना था! उसका पाठ करके गांधी जी के मुख से निकल पड़ा- ''मैं स्वामी जी के जीवन पर मुग्ध हूँ। उनकी अंग्रेजी जीवनी पढ़ी। तभी से ऋषि में प्रबल भक्ति और श्रद्धा है।'' वेद-मन्त्र जीवन को पावन बनाता है। वेद-ज्ञान से एक ऋषि का जीवन कितना पवित्र था, यह एक मुनि ने स्पष्ट देख लिया था।

भारत महान है कोई जाती धर्म नहीं, भारतीय ही मेरी पहचान है

खूव लगाओगे नारे तुम
मेरे भारत महान के,
कब तक रटके चिल्लाओगे
जरा मायने भई समझो तुम इसके सम्मान के
तुम वहाँ मन्दिर चाहोगे
तो तुम वहाँ मस्जिद बनवाओगे,
इससे पहले मन में शुद्धता कर
लेना तुम वरना कल फिर किसी और आसिफा को वहाँ ले जाओगे
कभी आरक्षण घटाने बढ़ाने की खातिर लड़जाते हो, तो कभी पिक्चर का नाम बदलने के लिए आक्रोश में आते हो, इंसानियत छोड़ तुम कुछ यूँ बंट जाते हो
कि किसी मासूम के इन्साफ के लिए, फहरवर्ड मैसेजेस से ज्यादा कुछ नहीं कर पाते हो
हर पीड़ित के पीछे धर्म लगाते हो
हर अपराधी के आगे राजनीति लाते हो,
इंसानियत, इज्जत और दर्द का कोई मज़हब नहीं होता
हर बार तुम बस यही क्यों भूल जाते हो
आज तुम "वी वांट जस्टिस" चिल्लाओगे
कल ट्रेंड खत्म होने के बाद फिर चुप हो जाओगे,
उन्हें इन्साफ मिले न मिले तुमको क्या?
एक नई घटना के बाद फिर भीड़ के साथ एक नई पोस्ट करने में
लग जाओगे
हिन्दू मुस्लिम में बंट जाते हो
तो कभी सामान्य दलित के लिए लड़ जाते हो,
कभी इंसान बन आना सामने
अन्याय के
देखना, कैसे अपने उन धर्म जाति लोगों द्वारा ही तुम घसीटे जाते हो
तुम खुद को हिन्दू बतलाते हो
तुम खुद को मुसलमान बताते हो,
मगर अपनी तसल्ली के लिए भी एक बार अपने गिरेबान में झाँक लेना
तुम तो बस खुद में एक इंसान रूपी हैवान छिपाते हो
चलो बात निर्भया आसिफा की
अब न करते हैं
तुमहारे धर्म की थोड़ी तारीफ करते हैं, अच्छा हुआ हमारा धर्म अभी यहाँ तक नहीं पहुँचा
की अगर बहर्डर पर कोई मुस्लिम शहीद हो जाए तो हम यहाँ उस लड़ाई में बचे हुए हिन्दू सैनिक को निशाना नहीं बनाते हैं
क्यों प्यार मोहब्बत पर इस जाति धर्म ने रोक लगाई
क्यों हिन्दू मुस्लिम नहीं हो सकते भाई-भाई ?
यूँ तो जानी दुश्मन हो तुम अपने ही देश के,
और फिर कहते हो भारत में अभी तक तरक्की क्यों नहीं आई
कभी तुम इतने मासूम बन जाते हो
यूँ बहकावे में आ अपने ही देश को जलाते हो,
धर्म जाति क्या कम थी ऐ होशियारों
अब तो तुम राजनीति में भी बंट जाते हो
इतने स्वार्थी हो तो थोड़े और स्वार्थी बन जाओ
जरा थोड़ा और धर्म जाति के लिए अपना प्रेम बढ़ाओ,
कम से कम अपने धर्म वालों की गरीबी ही मिटाओ
ज्यादा नहीं तो अपनी जाति की बेटियों को ही बचाओ
ये धर्म जाति का पुराण तुम अव वंद करो
इंसान रूपी मुखोटा हटा
हकीकत में इंसान बानो,
खुद को यूँ ऊँच-नीच की श्रेणी में न लाओ
इंसान हो,इंसानियत का सम्मान करो
फिर तुम जब मानव बनजाओगे
तो रटके चिल्लाना छोड़ मन में दोहराओगे,
हाँ मेरा भारत महान है
कोई जाती धर्म नहीं,
भारतीय ही मेरी पहचान है

ఈశ్వర స్తుతి ప్రార్థన ఉపాసనలు

-చలవాది సోమయ్య

కేవలము ఈశ్వర సుతి ప్రార్థనోపాసన వలనచే మానవుడు సదాచారి, సచ్చరిత్రుడు, విశ్వాసపాత్రుడు, సరోపకారి, దేశభక్తుడు సర్వసుగుణ సంపన్నుడు కాగలడు. 'యన్మనసా ధ్యాయతి తద్వాచా వదతి. యద్వాచా వదతి తత్కర్మణా కరోతి యత్కర్మణా కరోతి తదేవాభిసంపద్యతే' మనస్సుతో ధ్యానించుదానినే మాటలలో తెలుపును. మాటలలో ఉండునదే చేతలలో కానవగును. కర్మ చేసినట్లే మానవుని జీవితము మారును.

ఈశ్వరుడు సచ్చిదానంద స్వరూపుడు, నిరాకారుడు, సర్వశక్తిమంతుడు, న్యాయకారి, దయాళువు అజన్ముడు, అనంతుడు, నిర్వికారుడు, అనాది అనుపముడు, సర్వాధారుడు, సర్వేశ్వరుడు, సర్వవ్యాపకుడు, సర్వాంతర్యామి, అజరుడు, అమరుడు, అభయుడు, నిత్యుడు, పవిత్రుడు, సృష్టికర్త అని తెలిసికొని ఉపాసించు వ్యక్తి ఈశ్వరుని వంటి పవిత్ర గుణకర్మ స్వభావాలు కలవాడుగా మారుట సహజము. ఈశ్వరుని నుండి తప్ప జ్ఞానము, ఆనందము మరెచ్చటి నుండి లభించదు. కావున ఈశ్వరోపాసకుడు ఆనందఘనుడైన ఈశ్వరుని తప్ప ఎవరిని ఉపాసించడు. అందువలన పక్షపాతము, మోసము, అన్యాయము, చేయజాలడు. అందుచే పాతకానాం పంచైతత్ యదేతన్నాస్తి కప్రహః' ఆత్మ పరమాత్మ లేదనుట అన్నిటికన్న మించిన పాపము ఆత్మ పరమాత్మలను నమ్మనివాడు. తెలిసికొన యత్నించనివాడు, మహా పాపాత్ముడు. ఆత్మ పరమాత్మ లేదనువాడు చేయని పాపముండదు.

మనము మన జీవన సాఫల్యముకొఱకు ఈశ్వరుని స్తుతి ప్రార్థనోపాసనలు తప్పక చేయవలసియుండును. సంక్షిప్తముగా వేదోక్త ఈశ్వరస్తుతి ప్రార్థనోపాసనలు ఈ క్రింది వ్యాసమున పాఠకులు తెలిసకొనగలరు.

-సంపాదకుడు

ఈశ్వరుడంటే ఎవరు ? స్తుతి, ప్రార్థన, ఉపాసనలంటే ఏమిటి ? వానిని మనం ఎందుల కని చేయాలి ? అవి చేయడం వల్ల ప్రయోజనం ఏమిటి ? అనే విషయం ఈ వ్యాసంలో సంక్షిప్తంగా తెలిసికొందాం.

ఈశ్వరుడు (భగవంతుడు) ఒక్కడు. అతనికి అనేక పేర్లున్నవని వేదం నుడుపుతుంది. '....ఏకం సత్ విప్రా బహుధా వదన్తి అగ్నిం యమం మాతరిశ్వాస మాహుః॥ (ఋ. 1-164-47) - భగవంతుడు ఒక్కడు. ఇంద్రుడు, మిత్రుడు, వరుణుడు, అగ్ని, యముడు, మాతరిశ్వుడు మొదలైన పేర్లతో విద్వాంసులు ఆయనను పిలుస్తారు. భగవంతునికుండే గుణాలు, అతని స్వభావం, అతడు చేసే కర్మల్ని బట్టి ఆయన కనేక పేర్లు ఉన్నాయి. అంతటా ఎల్లప్పుడు వ్యాపించి ఉండడం, దయ, ఆనందం మొదలైనవి ఆయన గుణాలు. జీవులకు ఉపకారం చేయడం. తనను స్మరించే వారికి, ఉపాసించేవారికి ఆనందం కలిగించడం (జ్ఞానమును కూడ కలిగించును) ఆయన స్వభావం. సృష్టి, స్థితి, లయాలు చెయ్యడం, జీవులు చేసే పుణ్య పాపకర్మలకు సుఖదుఃఖ రూపంలో ఫలితాలు ఇవ్వడం ఆయన చేసే కర్మలు. ఇట్టివాడు భగవంతుడు.

భగవంతుడు చేసిన ఈ సృష్టిలో మానవుడు ఉత్తమ ప్రాణి. ఆహారం తీసికోవడం, నిద్రపోవడం, భయపడడం, సంతానం కనడం వంటివి పశుపక్ష్యాదులకు మానవులను సమానమే అయినా, ధర్మాధర్మ విచక్షణా జ్ఞానం కలిగి, ఈ ప్రపంచం ఎలా నిర్మించబడింది ? దీనికి కర్త ఎవరు ? అనే విషయాలను గురించి ఆలోచించడం కేవలం మనుష్యుడు మాత్రమే. చేయగలుగుతాడు, మిగిలిన జంతుకోటికి ఆ ఆకాశం లేదు. అందులకనే మానవుడు ఉత్తమ ప్రాణిగా ఎంచబడుతున్నాడు.

ఇట్టి మానవకోటిలో ఉద్భవించిన మహాపురుషులే మహర్షులు వారే విద్వాంసులు, దేవతలు అనబడతారు. వారు మానవ జీవితాన్ని, ప్రపంచాన్ని బహుకాలం పరిశీలించి మనకు చెప్పిన సత్యాలు ఏమిటంటే - ఈ ప్రపంచానికి సృష్టికర్త ఒకడున్నాడని, ఆయనను తెలిసికుంటేనే మనం ఈ జనన మరణ చక్రం నుండి విడివడి, మోక్షానందాన్ని - తెంపులేని శాశ్వత సుఖాన్ని పొందగలమని, అందుకు ఉపాయం ఈశ్వరుని స్తుతి, ప్రార్థన, ఉపాసనలు చెయ్యడమేనని తెల్పారు. "............తమేవ విదిత్వాతిమృత్యు మేతి నాన్యః పంథా విద్యతేయనాయ" (యజు. 31-18)

స్తుతి, ప్రార్థన, ఉపాసనలు - స్తుతి : స్తుతిర్నామ గుణానువాదః - భగవంతుని గుణగణాలను ఉన్నవి ఉన్నట్లు తెలిసికొని ఆయనను కీర్తించడం స్తుతి అవుతుంది (స్తుతి అనగా గుణములను తెలిసికొనుట, వినుట, ఇతరులకు తెలుపుట) స్తుతి రెండు విధాలు - సగుణ స్తుతి, నిర్గుణస్తుతి అని, భగవంతుడు సర్వవ్యాపకుడు, అనంత బలవంతుడు, శుద్ధుడు, సర్వజ్ఞుడు, దయామయుడు, నిత్యానందుడు, న్యాయకారి అని తెలియడం సగుణస్తుతి, అతడు శరీరాన్ని ధరించడు, పాపాలు చెయ్యడు దుఃఖం అనుభవించడు, అజ్ఞానం, రాగం, ద్వేషం మొదలగు గుణాలు అతనిలో లేవు అని నమ్మి ఆయనను కీర్తించడం నిర్గుణస్తుతి అవుతుంది. పరమేశ్వరుని గుణాల వలె మనగుణ, కర్మ, స్వభావాలను సరిదిద్దుకోవడం స్తుతికి ప్రయోజనం అవుతుంది. ఉదా॥ భగవంతుడు దయామయుడు, న్యాయకారి. గనుక మనం కూడ అలాగే ఉండాలనుకోవడం. కేవలం భట్రాజువలే భగవంతుని గుణగణాలను కీర్తిస్తూ తన చరిత్రను దిద్దుకొనని వాని స్తుతి వ్యర్థమౌతుంది.

ప్రార్థన : అర్థించడం అంటే కోరడమని, ప్రార్థించడమంటే బాగా కోగడమని అర్థం. మనవద్ద లేనిది, మనకు అవసరమున్నది మనం కోరుతాం. మనం శ్రమపడి సంపాదించుకోగలిగినవి, లోకంలో దొరికే పదార్థాలు భగవంతుని కోరనవసరం లేదు. ఆయన మనకు ఇప్పటికే ప్రపంచ పదార్థాల నన్నింటిని సృష్టించి అనుభవించుడని యిచ్చాడు. "తేన త్యక్తేనభుంజీథాః....." (యజు. 40-1) ప్రయత్నం చేసి వాటిని పొందడమే మనం చేయవలసిన పని. మరి మనం భగవంతుని కోరే పదార్థాలేమిటి ?

అంటే –

యాం మేధాం దేవగణాః పితరశ్చోపాసతే ।
తయా మామద్య మేధయాగ్నే మేధావినం
కురు స్వాహా ॥ –యజు 32–14

ఓ అగ్నీ – ప్రకాశ స్వరూప పరమాత్మా! నీ కృపచేత విద్వాంసులు, జ్ఞానులు యోగులు ఉపాసించి పొందిన మేధాబుద్ధిని మాకిచ్చి మమ్ములను కూడ అలాంటి మేధావంతులుగ చేయుము.

తేజోసి తేజో మయి ధేహి । వీర్యమసి వీర్యం మయి ధేహి । బలమసి బలం మయి ధేహి । ఓజోస్యోజో మయి ధేహి । మన్యురసి మన్యుం మయి ధేహి । సహోసి సహో మయిధేహి ॥ –యజు. 19.9

పరమేశ్వరా! నీవు తేజస్సువున్న – ప్రకాశ స్వరూపుడవు నాలోనూ ప్రకాశాన్ని నింపుము. నీవు వీర్యవంతుడవు – అనంత పరాక్రమశాలివి. నాలోనూ పూర్ణపరాక్రమాన్ని ఉంచుము. నీవు బలం – అనంత బలవంతుడవు. నాలోనూ బలాన్ని చేర్చుము. నీవు ఓజస్సువు – అనంత సామర్థ్యం కలవాడివి. నాకుకూడా పూర్ణ సామర్థ్యాన్ని ప్రసాదించుము. నీవు మన్యువు కలవాడవు. దుష్టులను దిద్దే కోపం కలవాడివి. నన్ను కూడ అలాగే చేయుము. నీవు సహనశీలుడివి – నిందాస్తుతులలోను నీకు అపకారం చేసే వారి ఎడల సహనం కలవాడివి. నేనుకూడ నీ కృపతో అలాగే అగుదును గాక!

బుద్ధి తేజస్సు వీర్యం, బలం (మానసిక ఆధ్యాత్మిక బలాదులు). ఓజస్సు, మన్యువు సహనం ఇవి ప్రపంచ పదార్థాలల్లో లభించేవి కావు. ఇవి పరమేశ్వరుని కృపచేత లభించేవి. కనుక వీటికోసమే మనం పరమేశ్వరుని ప్రార్థించాలి. అయితే మనం కోరే కోరికలు ధర్మబద్ధంగాను, ఇతరులకు అపకారం కలిగించనివిగాను ఉండాలి. కోరిన విధంగా ప్రయత్నం కూడా చేయాలి. పురుష ప్రయత్నం చేయని వాడికి అతని కోరికలు నెరవేరవు. ప్రయత్నం చేసేవాడికే ఇతరులు కూడ సహాయం చేస్తాడు. అలాగే ధర్మంతో పురుషార్థం చేసేవానికే భగవంతుడు కూడ సహాయం చేస్తాడు. సోమరికి కాదు. అందులకనే కుర్వన్నే వేహ కర్మాణి జిజీవిషేత్ శతం సమాః...' (యజు. 40–2) నూరేండ్లు జీవించు సత్కర్మలు చేస్తూనే జీవించుమని అంటుంది వేదం.

ఉపాసన : ఉప+అసనం ఉపాసనం అంటే దగ్గర చేరడమని అర్థం 'ఉపవాసం అన్నా అంతే'.

ఉప సమీపే యో వాసో జీవాత్మ పరమాత్మనోః ।
ఉపవాసస్య విజేయో నతు కాయస్య శోషణః ॥

జీవుడు పరమాత్మ సాన్నిధ్యంలో ఉండడం ఉపాసన లేక ఉపవాసం అవుతుంది గాని అన్నం తినకుండా శరీరాన్ని శుష్కింపజేయడం ఉపవాసం కాదు అని మనం గ్రహించాలి. పరమేశ్వరుడు సర్వవ్యాపకుడు, అంతర్యామి. అతడు జీవునికి లోపల వెలుపల (దగ్గరే) ఉన్నాడు కదా ? ఇక దగ్గర చేరడమంటే అర్థమేమిటి ? అంటే జీవునికి దేవునికి మధ్య దేశ దూరంగాని, కాల దూరంగాని లేదు. కాని అజ్ఞానమనే దూరం (తనలో భగవంతుడున్నాడని తెలియకపోవడం) ఉంది. ఆ తేలియనితనం – అజ్ఞానం ఎప్పుడు పోతుంది ? గురువుల ద్వారా శాస్త్రాల ద్వారా భగవంతుడు తనలో ఉన్నాడని సామాన్యంగా తెలిసికోవడమే కాకుండ, యమ, నియమ, ఆసన, ప్రాణాయామ, ప్రత్యాహార, ధారణ, ధ్యానాల ద్వారా చిత్తంలోని వృత్తుల్ని నిరోధించి సమాధిని పొందినవుడు భగవంతుడు తనలోనే ఉన్నాడని, అతడు ఆనందమయుడని, ఆనంద ప్రదాత అని సాధకుడు స్వానుభవంతో గ్రహిస్తాడు. అపుడు అజ్ఞానమనే దూరం పోతుంది.

సగుణోపాసన, నిర్గుణోపాసన అని స్తుతి మాదిరిగానే ఉపాసనకూడ రెండు విధాలు. సర్వజ్ఞత్వాది గుణాలు కలవాడు పరమేశ్వరుడని ఉపాసించడం సగుణోపాసన అవుతుంది. ఆయనలో రాగద్వేషాదులు శబ్ద స్పర్శ, రూప, రస, గంధాది గుణాలులేవని ఉపాసించడం నిర్గుణోపాసన అవుతుంది. విగ్రహారాధన సగుణోపాసన కాదు. అది సాకార ఉపాసన ఆకారం కలిగిన జడపదార్థాల్ని ఉపాసించడం అవుతుంది. కాని పరమేశ్వరుని ఉపాసన కాదు. పరమేశ్వరుని ఉపాసించే పద్ధతిని దయానందుడిలా వర్ణించాడు.

"ఉపాసన చేయునపుడు ఏకాంతమగు పరిశుద్ధ ప్రదేశమందు ఆసనము వేసికొని ప్రాణాయామము చేసి బాహ్యవిషయముల నుండి ఇంద్రియములను లాగి మనస్సును నాభిప్రదేశమందుగాని, హృదయమందుగాని, కంఠమందు గాని, నేత్రములందుగాని, శిఖయందుగాని, వెన్నెముక బ్రహ్మదండి యందు గాని స్థిరపరచి స్వాత్మ పరమాత్మల వివేచన చేయుచు పరమాత్మయందు మగ్నుడయి సంయమి కావలయును. ఈ సాధనములను చేసినపుడు అతని ఆత్మయు, అంతఃకరణమును పవిత్రములయి సత్యపూర్ణము లగుచున్నవి ప్రతి దినము జ్ఞానమును విజ్ఞానమును వర్ధిల్లి ముక్తినికూడ పొందును. ఎనిమిది జాములలో ఒక్కగడియ (ఇరవైనాలుగు నిమిషాలు) యేని ఇట్లు ధ్యానించెనేని అతడు సర్వదా ఉన్నతినే పొందదొడగును". (సత్యార్థ ప్రకాశం 7వ సముల్లాసం)

స్తుతి ప్రార్థన ఉపాసనల ఫలాన్ని దయానందుడిలా చెప్పాడు "చలిచేబాధితుడగు పురుషుడు అగ్ని సమీపించుటచే చలి దురమగునట్లు, పరమేశ్వరుని సమీపించుటనే సమస్త దోషములును, దుఃఖములును పోయి పరమేశ్వరుని గుణ, కర్మ స్వభావములవలె జీవాత్మ గుణకర్మ స్వభావములును పవిత్రములగును కాబట్టి పరమేశ్వరుని స్తుతి ప్రార్థన ఉపాసనలను అవశ్యము చేయువలయును. దీని ఫలము వేరుండగా, పర్వత మంతటి దుఃఖము ప్రాప్తించినను భయపడక సహించ గలుగును. ఆధ్యాత్మిక బలము వర్ధిల్లును. ఇది యేమి సాధారణమా ? ఇది కాక, పరమేశ్వరుని స్తుతి ప్రార్థన ఉపాసనలు చేయనివాడు మహా మూర్ఖుడును, కృతఘ్నుడు (చేసిన మేలు మరచువాడు)ను అగును. ఏలయనగా ఈ జగత్తున సమస్త పదార్థములను జీవులసుఖము కొరకు ప్రసాదించిన పరమాత్మని గుణములను మరచుటయు, ఆ ఈశ్వరునే నమ్మకుండు టయు, కృతఘ్నతయు మహా మూర్ఖతయు గాక మరేమగును ?" (స.ప్ర. 7వ సము.)

కాబట్టి నిత్యం మనం స్తుతి, ప్రార్థన, ఉపాసనలు చేస్తూ తద్వారా పరమేశ్వరుని పొంది మోక్షానందాన్ని అనుభవింతుము గాక!

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-11-2018 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ - తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్ రావు, మంత్రి సభ

To,

स्वामी दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस विशेष

ऋषि जीवन की अन्तिम वेला के अन्तिम क्षण

स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन का अन्तिम प्रहर समीप आ रहा था। सूर्यास्त होने के पूर्व की आभा उनके मुखमण्डल पर आ विराजमान हो गई थी। उनकी वाणी खुल गई थी। वे अपने आसन पर विराजमान हो धीरे-धीरे भक्तों से वार्ता कर रहे थे।

सन्ध्या के उतरने से पूर्व महर्षि जी की आज्ञा से नाई को बुलवाया गया। उस वेदना में भी उन्होंने क्षौर क्रिया (हजामत आदि) कराई। भीगे तौलिए से सिर-मुख पोंछ लिया और सहारे से पलंग पर बैठ गए।

अपने शिष्य आत्मानन्द को बुलाया और कहा-हमारे पीछे की ओर आकर खड़े हो जाओ अथवा बैठ जाओ। फिर कहा-आत्मानन्द क्या चाहते हो ? उन्होंने कहा- ईश्वर से यही चाहते हैं कि आप स्वस्थ हो जाएँ। महर्षि जी कुछ रुककर बोले- **"यह देह है। इसका क्या अच्छा होगा।"** फिर हाथ बढ़ा कर आत्मानन्द जी के सिर पर धरा तथा कहा- **"आनन्द से रहना"**। फिर गोपाल गिरि संन्यासी को बुलाया और कहा- **"तुम क्या चाहते हो ?"** उसने भी वही उत्तर दिया। ऋषिवर ने कहा- **"भई ! अच्छी प्रकार से रहना।"**

इस समय उनके चेहरे पर वेदना का कोई चिह्न नहीं था। महर्षि जी ने दो सौ रुपये व दो दुशाले मंगाकर भीमसेन, आत्मानन्द व डॉ. लछमनदास को भेंट किये, लेकिन उन्होंने लौटा दिये।

ईश्वर ! तेरी इच्छा पूर्ण हो

साँझ उतरते ही उन्होंने भवन के ऊपर-नीचे के सब द्वार खुलवा दिए। सब भक्तों को पीछे खड़े होने का आदेश दिया। उस दिन की स्थिति की जानकारी चाही। पंडिया रमालाल ने स्पष्ट किया कि आज कार्तिक कृष्ण पक्ष का अन्त है तथा शुक्ल पक्ष की आदि अमावस, दिन मंगलवार है। यह सुनकर बिनॉय कोठी की छत और दीवारों की ओर दृष्टि की, फिर वेदमन्त्रों का पाठ किया। अन्तिम क्षणों में महर्षि जी के दिव्य दर्शन से पण्डित गुरुदत्त की नास्तिक वृत्ति जाती रही और वैदिकधर्मी बन गये।

वेदपाठ के पश्चात् कुछ ईश्वर उपासना की फिर भाषा में ईश्वर के गुणों का थोड़ा-सा कथन कर अत्यन्त प्रसन्नता और हर्ष सहित गायत्री मन्त्र का पाठ करने लगे। पश्चात् हर्ष तथा प्रफुल्लित विचत्त सहित कुछ समय समाधिस्थ रहकर नयन खोलकर कहने लगे- **"हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। आहा ! तैंने अच्छी लीला की।"**

बस इतना ही कहा, महर्षि जी महाराज ने स्वयं करवट ली और एक प्रकार से श्वास को रोककर एक ही बार में बाहर निकाल दिया। इस प्रकार भारत भाग्य विधाता परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भौतिक शरीर का परित्याग कर निर्वाण पद प्राप्त किया। उस समय सन्ध्या के छह बजे थे तथा दीपमाला (दीपावली) का दिन था। विक्रमी संवत् १९४० कार्तिक बदी अमावस्या, दिन मंगलवार, ईस्वी सन् ३० अक्तूबर १८८३ था।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor : Vithal Rao Arya ● Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు మంత్రి సభ, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठलराव मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.